21 सूरए अल अम्बिया

Nyaya Darshan आधारित आलोचनात्मक विश्लेषण

आयत 1 (सूरा अल-अंबिया, 21:1)

अनुवादः
"लोगों के पास उनका हिसाब (उसका वक़्त) आ पहुँचा और वो हैं कि गफ़लत में पड़े मुँह मोड़े ही जाते हैं।"

Nyaya तत्वः Pramana (Valid Knowledge)
प्रतिज्ञा (Proposition):
यह आयत कहती है कि मानवता का अंत और उनका हिसाब-किताब (कयामत का दिन) नज़दीक है, लेकिन लोग ग़लती से इसे नजरअंदाज़ कर रहे हैं।

हेतु (Reason):
इस आयत में यह तर्क है कि लोग आखिरी दिन (कयामत) की अनदेखी कर रहे हैं और जीवन में केवल सांसारिक मामलों पर ध्यान केंद्रित कर रहे हैं।

उदाहरण (Example):
मानवता के अंत की चेतावनी और इसका अनुभव विभिन्न धर्मों में पाया जाता है। लेकिन, बिना किसी प्रत्यक्ष प्रमाण के इसे मानने को बाध्य करना, तर्क और वैध ज्ञान (Pramana) के सिद्धांत के खिलाफ़ है।

उपना (Application):
यह तर्क तब तक वैध नहीं हो सकता जब तक कयामत के दिन का कोई प्रत्यक्ष प्रमाण या तार्किक तर्क न दिया जाए।

निगमन (Conclusion):
यह आयत वैज्ञानिक और तर्कसंगत दृष्टिकोण से कमजोर है। भविष्य की अनिश्चित घटनाओं को बिना प्रमाण के स्वीकार करना Nyaya दर्शन के अनुसार उचित नहीं है। वैशेषिक दर्शन भी भौतिक प्रमाण की आवश्यकता पर बल देता है।

आयत 2 (सूरा अल-अंबिया, 21:2)

अनुवाद:
"जब उनके परवरदिगार की तरफ से उनके पास कोई नया हुक्म आता है तो उसे सिर्फ कान लगाकर सुन लेते हैं और (फिर उसका) हँसी खेल उड़ाते हैं।"

Nyaya तत्व: Hetu (Reason)
प्रतिज्ञा (Proposition):
यह आयत दावा करती है कि लोग अल्लाह के आदेशों को सुनते हैं लेकिन उसका मज़ाक उड़ाते हैं।

हेतु (Reason):
यह तर्क है कि लोग अल्लाह के संदेशों को गंभीरता से नहीं लेते और धर्म के प्रति उदासीन हैं।

उदाहरण (Example):
यदि एक नियम या आदेश तार्किक और मानवता के लिए लाभकारी हो, तो कोई उसका मज़ाक क्यों उड़ाएगा? यह सवाल उठता है कि क्या यह आदेश तार्किक और प्रमाणिक है।

उपना (Application):
लोग किसी बात का मज़ाक तब उड़ाते हैं जब वह उनके लिए असंगत, अव्यवहारिक या अप्रमाणिक लगती है।

निगमन (Conclusion):
यह आयत लोगों के व्यवहार को नकारात्मक रूप से चित्रित करती है, लेकिन आदेश के तर्क और प्रमाण का अभाव इसे कमजोर बनाता है। न्याय दर्शन के अनुसार, कोई भी आदेश तभी स्वीकार्य होता है जब वह तर्कसंगत और प्रमाणित हो।

आयत 3 (सूरा अल-अंबिया, 21:3)

अनुवाद:
"उनके दिल (आख़िरत के ख़्याल से) बिल्कुल बेख़बर हैं और ये ज़ालिम चुपके-चुपके कानाफूसी किया करते हैं कि ये शख़्स (मोहम्मद कुछ भी नहीं) बस तुम्हारे ही सा आदमी है तो क्या तुम दीदा व दानिस्ता जादू में फँसते हो।"

Nyaya तत्व: Upamana (Comparison)

प्रतिज्ञा (Proposition):

यह आयत कहती है कि लोग मोहम्मद को सामान्य व्यक्ति मानते हैं और उनकी बातों को जादू समझते हैं।

हेतु (Reason):

लोगों का तर्क है कि अगर मोहम्मद अल्लाह के रसूल होते, तो वे किसी सामान्य इंसान की तरह नहीं होते।

उदाहरण (Example):

विभिन्न धर्मों में दैवीय व्यक्तियों को सामान्य लोगों से अलग दिखाया जाता है। उदाहरण के लिए, हिंदू धर्म में भगवान के अवतार अलौकिक शक्तियों से युक्त होते हैं।

उपना (Application):

यह तर्क इस आयत पर लागू होता है कि यदि मोहम्मद वास्तव में रसूल होते, तो उन्हें असाधारण शक्तियां दिखानी चाहिए थीं।

निगमन (Conclusion):

यह आयत केवल मोहम्मद को बचाने के लिए लोगों की आलोचना करती है, लेकिन यह प्रमाण नहीं देती कि वे सामान्य व्यक्ति से अलग क्यों हैं। सांख्य दर्शन के अनुसार, सत्य को प्रमाण और अनुभव से परखा जाना चाहिए।

आयत 4 (सूरा अल-अंबिया, 21:4)

अनुवाद:

"(तो उस पर) रसूल ने कहा कि मेरा परवरदिगार जितनी बातें आसमान और ज़मीन में होती हैं ख़ूब जानता है (फिर क्यों कानाफूसी करते हो) और वह तो बड़ा सुनने वाला वाक़िफ़कार है।"

Nyaya तत्व: Prameya (Object of Knowledge)

प्रतिज्ञा (Proposition):

यह आयत दावा करती है कि अल्लाह हर बात जानता है और वह सुनने वाला तथा वाकिफ़कार है।

हेतु (Reason):

यह तर्क है कि अल्लाह सभी चीजों का ज्ञान रखता है, इसलिए उसके आदेशों का पालन करना चाहिए।

उदाहरण (Example):
यदि कोई व्यक्ति हर बात जानता है, तो उसे लोगों को विश्वास दिलाने के लिए स्पष्ट और प्रमाणिक तर्क प्रस्तुत करना चाहिए।

उपना (Application):
यह तर्क केवल विश्वास पर आधारित है, जबकि ज्ञान को प्रमाण से परखा जाना चाहिए।

निगमन (Conclusion):
यह आयत बिना प्रमाण के एक दावा करती है। वेदांत दर्शन के अनुसार, केवल वह ज्ञान स्वीकार्य है, जो अनुभव और प्रमाण पर आधारित हो।

आयत 5 (सूरा अल-अंबिया, 21:5)

अनुवाद:
"(उस पर भी उन लोगों ने इकतेफ़ा न की) बल्कि कहने लगे (ये कुरआन तो) ख्वाबहाय परीशाँ का मजमूआ है बल्कि उसने ख़ुद अपने जी से झूट-मूट गढ़ लिया है बल्कि ये शख़्स शायर है और अगर हक़ीकतन रसूल है) तो जिस तरह अगले पैग़म्बर मौजिज़ों के साथ भेजे गए थे।"

Nyaya तत्व: Hetu (Reason)
प्रतिज्ञा (Proposition):
यह आयत कहती है कि लोगों ने कुरआन को ख्वाबों और झूठ का मिश्रण बताया।

हेतु (Reason):
यह तर्क है कि यदि कुरआन सच्चा होता, तो यह पिछले पैग़म्बरों के चमत्कारों की तरह कुछ असाधारण संकेत प्रस्तुत करता।

उदाहरण (Example):
पिछले पैग़म्बरों, जैसे मूसा और ईसा के समय में चमत्कार हुए थे, जिनका दावा विभिन्न धर्मों में किया गया है।

उपना (Application):
यह तर्क इस आयत पर लागू होता है कि केवल दावों और कथनों के आधार पर किसी चीज़ को प्रमाणित नहीं किया जा सकता।

निगमन (Conclusion):

यह आयत लोगों के सवालों और तर्कों को दरकिनार करती है। न्याय दर्शन के अनुसार, किसी भी सत्य को प्रमाण, तर्क और अनुभव के आधार पर सिद्ध करना आवश्यक है।

सारणी (आयतों का तार्किक मूल्यांकन)

आयत संख्या	चुना गया Nyaya तत्व	मुख्य आलोचना
1	Pramana (Valid Knowledge)	**बिना प्रमाण के कयामत के दिन की चेतावनी तर्कसंगत नहीं है।**
2	Hetu (Reason)	**लोगों की आलोचना तर्कहीन है, क्योंकि आदेश का तार्किक आधार नहीं है।**
3	Upamana (Comparison)	**मोहम्मद को रसूल साबित करने के लिए प्रमाण की आवश्यकता है।**
4	Prameya (Object of Knowledge)	**अल्लाह के ज्ञान का दावा बिना प्रमाण के किया गया है।**
5	Hetu (Reason)	**चमत्कार के अभाव में कुरआन को प्रमाणित करना मुश्किल है।**

निष्कर्ष:

इन आयतों में मुख्य रूप से विश्वास और धार्मिक आदेशों पर बल दिया गया है, लेकिन तार्किक प्रमाण और अनुभव का अभाव इसे सार्वभौमिक दृष्टिकोण से कमजोर बनाता है। न्याय दर्शन और वैशेषिक दर्शन के अनुसार, कोई भी सत्य तभी स्वीकार्य होता है जब वह तर्क, अनुभव और प्रमाण से समर्थित हो।

Nyaya Darshan आधारित आलोचनात्मक विश्लेषण

आयत 6 (सूरा अल-अंबिया, 21:6)

अनुवाद:
"उसी तरह ये भी कोई मौजिज़ा (जैसा हम कहें) हमारे पास भला लाए तो सही इनसे पहले जिन बस्तियों को तबाह कर डाला (मौजिज़े भी देखकर तो) ईमान न लाए।"

Nyaya तत्व: Pramana (Valid Knowledge)
प्रतिज्ञा (Proposition):
इस आयत में दावा किया गया है कि पिछली बस्तियों ने मौजिज़े देखने के बावजूद ईमान नहीं लाया, इसलिए यह आशंका है कि वर्तमान लोग भी मौजिज़ों पर विश्वास नहीं करेंगे।

हेतु (Reason):
किसी घटना के प्रमाण के बिना इसे अतीत की सच्चाई के रूप में प्रस्तुत करना तर्कसंगत नहीं है।

उदाहरण (Example):
यदि पूर्व की बस्तियां तबाह हो चुकी थीं, तो उनकी तबाही का कोई भौतिक या ऐतिहासिक प्रमाण होना चाहिए। इस आयत में सिर्फ कथन दिया गया है, लेकिन कोई प्रमाण नहीं दिया गया।

उपना (Application):
किसी भी घटना की सच्चाई का निर्धारण तभी हो सकता है जब उसके प्रमाण मौजूद हों। बिना प्रमाण के इसे स्वीकार करना न्याय दर्शन और वैशेषिक दर्शन के विरुद्ध है।

निगमन (Conclusion):
यह आयत तर्क और प्रमाण के अभाव में कमजोर है। वैशेषिक दर्शन के अनुसार, सत्य को भौतिक प्रमाण से परखा जाना चाहिए।

आयत 7 (सूरा अल-अंबिया, 21:7)

अनुवाद:
"और ऐ रसूल हमने तुमसे पहले भी आदमियों ही को (रसूल बनाकर) भेजा था कि उनके पास "वही" भेजा करते थे तो अगर तुम लोग ख़ुद नहीं जानते हो तो आलिमों से पूँछकर देखो।"

Nyaya तत्व: Prameya (Object of Knowledge)
प्रतिज्ञा (Proposition):

यह आयत कहती है कि मोहम्मद से पहले भी रसूलों को भेजा गया था, और उनके बारे में ज्ञान रखने वाले आलिम (विद्वान) इस तथ्य की पुष्टि कर सकते हैं।

हेतु (Reason):
यह तर्क दिया गया है कि पूर्व के रसूल भी सामान्य इंसान थे और उनके पास अल्लाह का संदेश (वही) आया करता था।

उदाहरण (Example):
पिछले रसूलों और उनके कार्यों का कोई ऐतिहासिक या प्रमाणिक विवरण इस आयत में नहीं दिया गया। केवल "आलिमों" से पूछने की बात कहना पर्याप्त नहीं है।

उपना (Application):
यह तर्क अधूरा है, क्योंकि "आलिमों" की पहचान और उनकी निष्पक्षता पर सवाल उठता है। प्रमाण केवल व्यक्तिगत विश्वास पर आधारित नहीं हो सकता।

निगमन (Conclusion):
यह आयत बिना प्रमाण के केवल विश्वास का आह्वान करती है। न्याय दर्शन के अनुसार, किसी भी ज्ञान का स्रोत वैध और प्रमाणित होना चाहिए।

आयत 8 (सूरा अल-अंबिया, 21:8)

अनुवाद:
"और हमने उन (पैग़म्बरों) के बदन ऐसे नहीं बनाए थे कि वह खाना न खाएँ और न वह (दुनिया में) हमेशा रहने सहने वाले थे।"

Nyaya तत्व: Vyapti (Invariable Concomitance)
प्रतिज्ञा (Proposition):
यह आयत दावा करती है कि पूर्व के पैग़म्बर भी सामान्य मनुष्यों की तरह थे, जिन्हें भोजन की आवश्यकता होती थी और वे अमर नहीं थे।

हेतु (Reason):
इस आयत में यह तर्क है कि पैग़म्बर विशेष नहीं थे और उनकी मानवता के समानता यह सिद्ध करती है कि वे दैवीय नहीं थे।

उदाहरण (Example):
 यदि पैग़म्बर सामान्य मनुष्य थे, तो उनके दैवीय संदेश को विशेष मानने का क्या आधार है? केवल संदेशवाहक होने के कारण उन्हें किसी विशेष दर्जे का दावा नहीं किया जा सकता।

उपना (Application):
 यह तर्क इस आयत के मूल दावे को कमजोर करता है, क्योंकि यह सामान्य मानव और पैग़म्बर में कोई स्पष्ट भिन्नता नहीं दिखाता।

निगमन (Conclusion):
 यह आयत केवल पैग़म्बरों की समानता को दिखाती है, लेकिन यह साबित नहीं करती कि उनके पास कोई विशेष ज्ञान या अधिकार था। सांख्य दर्शन के अनुसार, किसी भी दावे को प्रमाणित करने के लिए विशिष्ट तर्क और अनुभव आवश्यक है।

आयत 9 (सूरा अल-अंबिया, 21:9)

अनुवाद:
 "फिर हमने उन्हें (अपना अज़ाब का) वायदा सच्चा कर दिखाया (और जब अज़ाब आ पहुँचा) तो हमने उन पैग़म्बरों को और जिस जिसको चाहा छुटकारा दिया और हद से बढ़ जाने वालों को हलाक कर डाला।"

Nyaya तत्व: Hetu (Reason)
 प्रतिज्ञा (Proposition):
 यह आयत दावा करती है कि अल्लाह ने अपने वादे को पूरा करते हुए पैग़म्बरों को बचा लिया और दूसरों को नष्ट कर दिया।

हेतु (Reason):
 इस आयत में यह तर्क है कि अल्लाह ने अपने आदेश और शक्ति का प्रदर्शन करते हुए न्याय किया।

उदाहरण (Example):
 किसी अज़ाब या तबाही का कोई ऐतिहासिक प्रमाण या सबूत नहीं दिया गया है। इसके अलावा, केवल "चुनिंदा" लोगों को बचाना न्याय की सार्वभौमिक अवधारणा के खिलाफ़ है।

उपना (Application):
 यह तर्क पक्षपातपूर्ण दिखता है, क्योंकि यह "चुनिंदा" लोगों को बचाने की बात करता है। यह सार्वभौमिक न्याय और करुणा के सिद्धांतों का उल्लंघन करता है।

निगमन (Conclusion):
 यह आयत पक्षपाती न्याय को बढ़ावा देती है, जो मानवता के लिए अस्वीकार्य है। मनुस्मृति के अनुसार, न्याय समान और निष्पक्ष होना चाहिए।

आयत 10 (सूरा अल-अंबिया, 21:10)

अनुवादः
 "हमने तो तुम लोगों के पास वह किताब (कुरआआन) नाज़िल की है जिसमें तुम्हारा (भी) ज़िक्रे (ख़ैर) है तो क्या तुम लोग (इतना भी) नहीं समझते।"

Nyaya तत्व: Pramana (Valid Knowledge)
 प्रतिज्ञा (Proposition):
 यह आयत कहती है कि कुरआन में मानवता का भला और उनकी भलाई के लिए संदेश हैं।

हेतु (Reason):
 कुरआन को मानवता के लिए एक मार्गदर्शिका के रूप में प्रस्तुत किया गया है, लेकिन इसमें दिए गए आदेश और कथन सभी के लिए प्रासंगिक और न्यायसंगत होने चाहिए।

उदाहरण (Example):
 कुरआन में कई ऐसे कथन हैं जो केवल एक विशिष्ट समुदाय के लिए हैं, न कि संपूर्ण मानवता के लिए।

उपना (Application):
 यह तर्क केवल तब स्वीकार्य है जब कुरआन के संदेशों को सभी मानव जाति के लिए समान रूप से लागू किया जा सके।

निगमन (Conclusion):
 यह आयत कुरआन की सार्वभौमिकता का दावा करती है, लेकिन इसकी सामग्री विशिष्ट और पक्षपाती है। न्याय दर्शन और वैशेषिक दर्शन के अनुसार, सार्वभौमिकता और निष्पक्षता ज्ञान के आवश्यक तत्व हैं।

सारणी (आयतों का तार्किक मूल्यांकन)

आयत	चुना गया Nyaya तत्व	मुख्य आलोचना

संख्या		
6	Pramana (Valid Knowledge)	**पूर्व बस्तियों के नष्ट होने का कोई ऐतिहासिक प्रमाण नहीं है।**
7	Prameya (Object of Knowledge)	**पूर्व के रसूलों का प्रमाणित विवरण नहीं दिया गया है।**
8	Vyapti (Invariable Concomitance)	**सामान्य इंसानों और पैग़म्बरों में भिन्नता स्पष्ट नहीं है।**
9	Hetu (Reason)	**पक्षपाती न्याय का दावा मानवता के लिए अस्वीकार्य है।**
10	Pramana (Valid Knowledge)	**कुरआन की सार्वभौमिकता का दावा तर्क और प्रमाण के अभाव में कमजोर है।**

निष्कर्ष:

इन आयतों में कई दावे ऐसे हैं जो तर्क, प्रमाण और न्याय के सार्वभौमिक सिद्धांतों के अनुरूप नहीं हैं। न्याय दर्शन, वैशेषिक दर्शन, और मनुस्मृति के अनुसार, किसी भी कथन को तभी स्वीकार किया जा सकता है जब वह तर्कसंगत और सार्वभौमिक रूप से लागू हो।

Nyaya Darshan आधारित आलोचनात्मक विश्लेषण

आयत 11 (सूरा अल-अंबिया, 21:11)

अनुवाद:
"और हमने कितनी बस्तियों को जिनके रहने वाले सरकश थे बरबाद कर दिया और उनके बाद दूसरे लोगों को पैदा किया।"

Nyaya तत्व: Vyapti (Invariable Concomitance)
प्रतिज्ञा (Proposition):
यह दावा किया गया है कि सरकश (अवज्ञाकारी) बस्तियों को नष्ट कर दिया गया और उनके स्थान पर अन्य लोगों को पैदा किया गया।

हेतु (Reason):
सरकशता के आधार पर बस्तियों का नाश करना दैवीय न्याय के रूप में प्रस्तुत किया गया है।

उदाहरण (Example):
किसी भी ऐतिहासिक घटना या प्रमाण का उल्लेख नहीं है जो यह दिखाए कि "सरकश" बस्तियों को केवल उनके कार्यों के आधार पर नष्ट किया गया।

उपना (Application):
किसी भी बस्ती के नाश का कारण केवल उनके नैतिक या धार्मिक कार्यों को मान लेना तर्कसंगत नहीं है। प्राकृतिक आपदाओं का वैज्ञानिक और ऐतिहासिक आधार होता है।

निगमन (Conclusion):
यह आयत न्याय की सार्वभौमिक अवधारणा के खिलाफ़ है। वैशेषिक दर्शन के अनुसार, किसी भी घटना का कारण प्राकृतिक और तर्कसंगत होना चाहिए। "सरकशता" के आधार पर नाश का दावा अवैज्ञानिक और पक्षपातपूर्ण है।

आयत 12 (सूरा अल-अंबिया, 21:12)

अनुवाद:
"तो जब उन लोगों ने हमारे अज़ाब की आहट पाई तो एका एकी भागने लगे।"

Nyaya तत्व: Prameya (Object of Knowledge)
प्रतिज्ञा (Proposition):
यह दावा किया गया है कि जब लोगों ने अल्लाह के अज़ाब को आते देखा, तो वे घबरा कर भागने लगे।

हेतु (Reason):
किसी अज्ञात "अज़ाब" (दंड) की बात की जा रही है, लेकिन इसे परिभाषित या प्रमाणित नहीं किया गया है।

उदाहरण (Example):
भौतिक दृष्टिकोण से, किसी अज़ाब (आपदा) का आना वैज्ञानिक या ऐतिहासिक कारणों पर आधारित होता है। केवल दैवीय शक्ति को इसका कारण बताना अवैज्ञानिक है।

उपना (Application):
यह दावा तर्कहीन है क्योंकि यह घटना का कोई तार्किक या ऐतिहासिक प्रमाण नहीं देता। प्राकृतिक आपदाओं को दैवीय हस्तक्षेप मानना न्याय दर्शन के अनुसार दोषपूर्ण तर्क है।

निगमन (Conclusion):
यह आयत दैवीय हस्तक्षेप के दावे पर आधारित है, लेकिन इसमें कोई प्रमाण नहीं है।

आयत 13 (सूरा अल-अंबिया, 21:13)

अनुवाद:
"(हमने कहा) भागो नहीं और उन्हीं बस्तियों और घरों में लौट जाओ जिनमें तुम चैन करते थे ताकि तुमसे कुछ पूछगछ की जाए।"

Nyaya तत्व: Hetu (Reason)
प्रतिज्ञा (Proposition):
यह आयत दावा करती है कि बस्तियों के लोगों को उनके कार्यों के लिए पूछताछ का सामना करना पड़ा।

हेतु (Reason):
यह आयत इस विचार को बढ़ावा देती है कि अल्लाह लोगों को उनके कार्यों के लिए दंडित करता है।

उदाहरण (Example):
किसी भी सभ्य समाज में न्याय प्रक्रिया पारदर्शी और तार्किक होती है। इस आयत में बिना किसी निष्पक्षता के सजा का प्रावधान बताया गया है।

उपना (Application):
यह तर्क कमजोर है क्योंकि यह न्याय की निष्पक्षता और मानवाधिकारों की अवधारणा के खिलाफ़ है।

निगमन (Conclusion):
यह आयत न्याय को अनुचित तरीके से प्रस्तुत करती है। मनुस्मृति के अनुसार, दंड केवल सही जांच और प्रमाण के बाद ही दिया जाना चाहिए।

आयत 14 (सूरा अल-अंबिया, 21:14)

अनुवादः

"वह लोग कहने लगे हाए हमारी शामत बेशक हम सरकश तो ज़रूर थे।"

Nyaya तत्व: Pramana (Valid Knowledge)

प्रतिज्ञा (Proposition):

यह आयत बताती है कि लोग खुद को सरकश मानते थे और अपनी गलती स्वीकार करते थे।

हेतु (Reason):

यह तर्क दिया गया है कि "सरकश" लोग अपने कर्मों के लिए जिम्मेदार थे।

उदाहरण (Example):

ऐतिहासिक दृष्टिकोण से, ऐसा कोई प्रमाण नहीं है जो यह दिखाए कि प्राचीन समाजों ने स्वयं को "सरकश" मानते हुए अपने विनाश को स्वीकार किया।

उपना (Application):

किसी भी समाज का आत्म-स्वीकार तभी मान्य हो सकता है जब उसके साक्ष्य और संदर्भ मौजूद हों।

निगमन (Conclusion):

यह आयत ऐतिहासिक प्रमाणों के अभाव में अविश्वसनीय है। वैशेषिक दर्शन के अनुसार, प्रमाणों के बिना कोई भी सत्य सार्वभौमिक रूप से स्वीकार्य नहीं हो सकता।

आयत 15 (सूरा अल-अंबिया, 21:15)

अनुवादः

"ग़रज़ वह बराबर यही पड़े पुकारा किए यहाँ तक कि हमने उन्हें कटी हुयी खेती की तरह बिछा के ठन्डा करके ढेर कर दिया।"

Nyaya तत्व: Vyapti (Invariable Concomitance)

प्रतिज्ञा (Proposition):

यह दावा किया गया है कि अल्लाह ने सरकश लोगों को पूरी तरह से नष्ट कर दिया।

हेतु (Reason):

इस आयत में कहा गया है कि दैवीय शक्ति ने संपूर्ण समाज को खत्म कर दिया।

उदाहरण (Example):

ऐतिहासिक और भौतिक दृष्टिकोण से, समाजों का नाश केवल प्राकृतिक आपदाओं या मानव संघर्षों के कारण होता है। "दैवीय नाश" का कोई ठोस प्रमाण नहीं है।

उपना (Application):

समाज के नाश को केवल "दैवीय हस्तक्षेप" मानना वैज्ञानिक और तार्किक दृष्टिकोण से गलत है।

निगमन (Conclusion):

यह आयत दैवीय हस्तक्षेप को बिना प्रमाण के बढ़ावा देती है। न्याय दर्शन के अनुसार, सत्य को प्रमाणित किया जाना चाहिए।

सारणी (आयतों का तार्किक मूल्यांकन)

आयत संख्या	चुना गया Nyaya तत्व	मुख्य आलोचना
11	Vyapti (Invariable Concomitance)	**सरकशता के आधार पर बस्तियों का नाश न्यायसंगत और प्रमाणित नहीं है।**
12	Prameya (Object of Knowledge)	**अज़ाब की आहट का कोई तार्किक या वैज्ञानिक आधार नहीं दिया गया।**
13	Hetu (Reason)	**न्याय प्रक्रिया को पारदर्शी और निष्पक्ष नहीं दिखाया गया।**
14	Pramana (Valid Knowledge)	**सरकश लोगों की आत्म-स्वीकृति का कोई ऐतिहासिक प्रमाण नहीं है।**
15	Vyapti (Invariable Concomitance)	**दैवीय नाश का कोई वैज्ञानिक या ऐतिहासिक प्रमाण नहीं है।**

निष्कर्ष:

इन आयतों में न्याय, सत्य और प्रमाण के सार्वभौमिक सिद्धांतों का अभाव है। न्याय दर्शन, वैशेषिक दर्शन, और मनुस्मृति के अनुसार, किसी भी दावे को तभी स्वीकार किया जा सकता है जब वह तर्क, प्रमाण और निष्पक्षता पर आधारित हो। इन आयतों में दैवीय हस्तक्षेप का दावा किया गया है, लेकिन इसे प्रमाणित नहीं किया गया है।

Nyaya Darshan आधारित आलोचनात्मक विश्लेषण

आयत 16 (सूरा अल-अंबिया, 21:16)

अनुवाद:
"और हमने आसमान और ज़मीन को और जो कुछ इन दोनों के दरमियान है बेकार लगो नहीं पैदा किया।"

Nyaya तत्व: Prameya (Object of Knowledge)
प्रतिज्ञा (Proposition):
यह दावा किया गया है कि आसमान और ज़मीन को उद्देश्यपूर्ण रूप से बनाया गया है, न कि व्यर्थ।

हेतु (Reason):
इस कथन में उद्देश्य का दावा है लेकिन इसे प्रमाणित करने के लिए कोई ठोस आधार नहीं दिया गया है।

उदाहरण (Example):
वैशेषिक दर्शन के अनुसार, सृष्टि को कारण-कार्य संबंध और प्रमाणित सिद्धांतों से समझा जाना चाहिए। केवल "ईश्वर की इच्छा" के आधार पर इसे मान लेना अस्वीकार्य है।

उपना (Application):
सृष्टि के उद्देश्य को सिद्ध करने के लिए प्रमाण की आवश्यकता है। बिना प्रमाण के, यह दावा निराधार है।

निगमन (Conclusion):
यह आयत सृष्टि के उद्देश्य का दावा करती है लेकिन इसे तर्क और प्रमाण के आधार पर सही नहीं ठहराती।

आयत 17 (सूरा अल-अंबिया, 21:17)

अनुवाद:
"अगर हम कोई खेल बनाना चाहते तो बेशक हम उसे अपनी तजवीज़ से बना लेते अगर हमको करना होता (मगर हमें शायान ही न था)।"

Nyaya तत्व: Hetu (Reason)
प्रतिज्ञा (Proposition):
यह कहा गया है कि यदि अल्लाह को खेल बनाना होता, तो वह स्वयं इसे बना सकता था।

हेतु (Reason):
"खेल" और "तजवीज़" के संदर्भ अस्पष्ट हैं। किसी भी तर्कसंगत व्यवस्था में ऐसे दावों का ठोस और स्पष्ट विवरण आवश्यक है।

उदाहरण (Example):
न्याय दर्शन के अनुसार, कोई भी दावा जब तक स्पष्ट और प्रमाणित न हो, वह तर्कहीन होता है। यहाँ "खेल" और "तजवीज़" को स्पष्ट रूप से परिभाषित नहीं किया गया है।

उपना (Application):
यह आयत मानव मस्तिष्क को भ्रमित करती है क्योंकि यह न तो कोई स्पष्ट तर्क देती है और न ही इसे सत्यापित करती है।

निगमन (Conclusion):
यह आयत तर्क और प्रमाण की कसौटी पर खरी नहीं उतरती।

आयत 18 (सूरा अल-अंबिया, 21:18)

अनुवाद:
"बल्कि हम तो हक़ को नाहक़ (के सर) पर खींच मारते हैं तो वह बातिल के सर को कुचल देता है फिर वो उसी वक़्त नेस्तो नाबूद हो जाता है और तुम पर अफ़सोस है कि ऐसी-ऐसी नाहक़ बातें बनाया करते हो।"

Nyaya तत्व: Vyapti (Invariable Concomitance)
प्रतिज्ञा (Proposition):
यह दावा किया गया है कि "हक़" (सत्य) "नाहक़" (झूठ) को नष्ट कर देता है।

हेतु (Reason):
"हक़" और "नाहक़" के बीच संघर्ष का यह दावा तर्क और प्रमाण पर आधारित नहीं है।

उदाहरण (Example):
उत्तर मीमांसा (वेदांत) के अनुसार, सत्य और असत्य का निर्धारण अनुभव, प्रमाण और तर्क से होता है। "हक़" और "नाहक़" को केवल धार्मिक आधार पर प्रस्तुत करना दोषपूर्ण है।

उपना (Application):
यह कथन वास्तविकता में "सत्य" और "झूठ" की परिभाषा को स्पष्ट नहीं करता।

निगमन (Conclusion):
यह आयत सार्वभौमिक सत्य और न्याय की धारणा को स्पष्ट रूप से परिभाषित करने में विफल है।

आयत 19 (सूरा अल-अंबिया, 21:19)

अनुवाद:
"हालाँकि जो (फरिश्ते) आसमान और ज़मीन में हैं (सब) उसी के (बन्दे) हैं और जो (फरिश्ते) उस सरकार में हैं न तो वो उसकी इबादत की शेख़ी करते हैं और न थकते हैं।"

Nyaya तत्व: Pramana (Valid Knowledge)
प्रतिज्ञा (Proposition):
यह कहा गया है कि आसमान और ज़मीन में मौजूद सभी चीज़ें अल्लाह की बंदगी करती हैं।

हेतु (Reason):
फरिश्तों और बंदगी का यह दावा तर्कसंगत और वैज्ञानिक प्रमाणों से रहित है।

उदाहरण (Example):
वैशेषिक दर्शन के अनुसार, कोई भी कथन तभी मान्य है जब वह प्रत्यक्ष, अनुमान, उपमान या शब्द प्रमाण से साबित हो। यहाँ ऐसा कोई प्रमाण नहीं दिया गया है।

उपना (Application):
"फरिश्ते" और उनकी "बंदगी" का दावा केवल विश्वास पर आधारित है, जो तर्कहीन है।

निगमन (Conclusion):
यह आयत तर्क और प्रमाण के बिना प्रस्तुत की गई है और इसे सार्वभौमिक सत्य नहीं माना जा सकता।

आयत 20 (सूरा अल-अंबिया, 21:20)

अनुवाद:
"रात और दिन उसकी तस्बीह किया करते हैं (और) कभी काहिली नहीं करते।"

Nyaya तत्व: Prameya (Object of Knowledge)
प्रतिज्ञा (Proposition):
यह कहा गया है कि "फरिश्ते" दिन-रात अल्लाह की स्तुति करते रहते हैं।

हेतु (Reason):
यह दावा न तो प्रत्यक्ष है और न ही इसका कोई प्रमाण दिया गया है।

उदाहरण (Example):
न्याय दर्शन और वैशेषिक दर्शन के अनुसार, किसी भी अदृश्य और अनुभव से बाहर के तत्व को प्रमाणित किए बिना मान्य नहीं माना जा सकता।

उपना (Application):
यह आयत अदृश्य और अप्रमाणित तत्वों पर आधारित है, जो तर्कसंगत रूप से अस्वीकार्य है।

निगमन (Conclusion):
यह आयत तर्क और प्रमाण की कसौटी पर खरी नहीं उतरती।

सारणी (आयतों का तार्किक मूल्यांकन)

आयत संख्या	चुना गया Nyaya तत्व	मुख्य आलोचना
16	Prameya (Object of Knowledge)	**सृष्टि के उद्देश्य का कोई प्रमाण नहीं दिया गया।**
17	Hetu (Reason)	**"खेल" और "तजवीज़" का अस्पष्ट और अप्रमाणित**

		दावा।
18	Vyapti (Invariable Concomitance)	**सत्य और झूठ के संघर्ष का कोई स्पष्ट तर्क नहीं।**
19	Pramana (Valid Knowledge)	**"फरिश्तों" और "बंदगी" का कोई वैज्ञानिक प्रमाण नहीं।**
20	Prameya (Object of Knowledge)	**अदृश्य "फरिश्तों" द्वारा स्तुति का दावा तर्कहीन है।**

निष्कर्ष:

इन आयतों में सृष्टि, सत्य-असत्य और दैवीय बंदगी से संबंधित दावे किए गए हैं, लेकिन इनमें तर्क और प्रमाण की कमी है। न्याय दर्शन और वैशेषिक दर्शन के अनुसार, किसी भी दावे को तभी मान्य माना जा सकता है जब वह तर्कसंगत और प्रमाणित हो। इन आयतों में तर्क और प्रमाण का अभाव स्पष्ट रूप से दिखता है।

Nyaya Darshan आधारित आलोचनात्मक विश्लेषण

आयत 21 (सूरा अल-अंबिया, 21:21)

अनुवाद:
"उन लोगों ने जो माबूद ज़मीन में बना रखे हैं क्या वही (लोगों को) ज़िन्दा करेंगे।"

Nyaya तत्व: Pramana (Valid Knowledge)
प्रतिज्ञा (Proposition):
यह दावा किया गया है कि ज़मीन के माबूद (देवता) पुनर्जीवन (ज़िन्दा करना) नहीं कर सकते।

हेतु (Reason):
यह कथन बिना किसी प्रमाण के "माबूद" को अक्षम ठहराने का प्रयास करता है। पुनर्जीवन का सिद्धांत न तो स्पष्ट है और न ही इसे किसी वैज्ञानिक या तात्त्विक आधार पर प्रमाणित किया गया है।

उदाहरण (Example):
वैशेषिक दर्शन के अनुसार, पुनर्जीवन और जीवन के रहस्य को प्रमाण और अनुभव के बिना नहीं समझा जा सकता। यह दावा केवल धारणा पर आधारित है।

उपना (Application):
यह कथन केवल "माबूद" को नकारने के उद्देश्य से प्रस्तुत किया गया है, लेकिन इसमें कोई तार्किक या वैज्ञानिक आधार नहीं है।

निगमन (Conclusion):
यह आयत बिना किसी ठोस प्रमाण के, केवल धार्मिक पूर्वाग्रह के आधार पर दावा करती है, जो न्याय और तर्क के सिद्धांतों के विपरीत है।

आयत 22 (सूरा अल-अंबिया, 21:22)

अनुवाद:
"(बा ग़रज़ मुहाल) ज़मीन व आसमान में ख़ुदा कि सिवा चन्द माबूद होते तो दोनों कब के बरबाद हो गए होते।"

Nyaya तत्व: Hetu (Reason)
प्रतिज्ञा (Proposition):
यह कहा गया है कि यदि अल्लाह के सिवा अन्य माबूद होते, तो ज़मीन और आसमान नष्ट हो जाते।

हेतु (Reason):
यह एक अनुमान (fallacy of assumption) है कि बहुदेववाद से ब्रह्मांड की विनाश की संभावना बढ़ती है। इसके समर्थन में कोई वैज्ञानिक या दार्शनिक प्रमाण प्रस्तुत नहीं किया गया है।

उदाहरण (Example):
सांख्य योग के अनुसार, सृष्टि का संचालन गुणों (सत्व, रज, तम) के संतुलन से होता है। यहाँ किसी "एक ईश्वर" की अनिवार्यता के बिना भी यह संभव है।

उपना (Application):
कथन में बहुदेववाद को बिना आधार के नकारा गया है। यह वैचारिक स्वतंत्रता के विपरीत है।

निगमन (Conclusion):
यह आयत बिना तर्कसंगत प्रमाण के, बहुदेववाद को नकारते हुए एकेश्वरवाद को स्थापित करने का प्रयास करती है।

आयत 23 (सूरा अल-अंबिया, 21:23)

अनुवादः
"जो कुछ वो करता है उसकी पूछगछ नहीं हो सकती।"

Nyaya तत्वः Vyapti (Invariable Concomitance)
प्रतिज्ञा (Proposition):
यह दावा है कि अल्लाह जो भी करता है, उसकी जांच नहीं की जा सकती।

हेतु (Reason):
यह तर्क शक्ति (reasoning) को पूरी तरह से नकारता है। कोई भी सार्वभौमिक व्यवस्था तर्क और जांच के अधीन होनी चाहिए।

उदाहरण (Example):
न्याय दर्शन के अनुसार, सत्य को केवल प्रमाण और तर्क से स्वीकार किया जा सकता है। यहाँ "पूछगछ न करने" का दावा अवैज्ञानिक और तर्कहीन है।

उपना (Application):
यह आयत तर्क और आलोचना को अस्वीकार करती है, जो मानव विचार की स्वतंत्रता के विरुद्ध है।

निगमन (Conclusion):
यह आयत किसी भी प्रकार की तर्कसंगतता को नकारती है, जो मानवता के लिए अनुपयुक्त है।

आयत 24 (सूरा अल-अंबिया, 21:24)

अनुवादः
"क्या उन लोगों ने ख़ुदा को छोड़कर कुछ और माबूद बना रखे हैं? (ऐ रसूल) तुम कहो कि भला अपनी दलील तो पेश करो।"

Nyaya तत्व: Pramana (Valid Knowledge)

प्रतिज्ञा (Proposition):

यह दावा है कि अन्य "माबूद" के अस्तित्व का कोई प्रमाण नहीं है।

हेतु (Reason):

यह आयत बहुदेववाद को प्रमाण के अभाव में नकारने का प्रयास करती है, लेकिन स्वयं एकेश्वरवाद के पक्ष में कोई प्रमाण प्रस्तुत नहीं करती।

उदाहरण (Example):

उत्तर मीमांसा (वेदांत) में "ब्रह्म" को एक परम सत्य के रूप में स्वीकार किया गया है, लेकिन यह बहुदेववाद को नकारता नहीं है।

उपना (Application):

यह आयत बिना प्रमाण के एक मत को श्रेष्ठ ठहराने की कोशिश करती है।

निगमन (Conclusion):

यह आयत अन्य मतों को नकारने के लिए तर्क और प्रमाण का सहारा नहीं लेती, जो तात्त्विक रूप से दोषपूर्ण है।

आयत 25 (सूरा अल-अंबिया, 21:25)

अनुवाद:

"हमने तुमसे पहले जब कभी कोई रसूल भेजा तो उसके पास "वही" भेजते रहे कि बस हमारे सिवा कोई माबूद क़ाबिले परसतिश नहीं।"

Nyaya तत्व: Upamana (Comparison)

प्रतिज्ञा (Proposition):

यह दावा है कि सभी पूर्ववर्ती पैगंबरों ने एकेश्वरवाद का संदेश दिया।

हेतु (Reason):

ऐतिहासिक और सांस्कृतिक रूप से, विभिन्न धर्मों ने बहुदेववाद और प्राकृतिक तत्वों की पूजा को प्राथमिकता दी है। यह दावा इन तथ्यों के विपरीत है।

उदाहरण (Example):
मनुस्मृति और वेदों में देवताओं के विविध रूपों का उल्लेख है, जो इस दावे को खारिज करता है।

उपना (Application):
यह आयत ऐतिहासिक साक्ष्यों के विपरीत है और धार्मिक बहुलता को नकारती है।

निगमन (Conclusion):
यह आयत अन्य धर्मों की वास्तविकताओं और ऐतिहासिक तथ्यों को नकारकर एकपक्षीय दृष्टिकोण प्रस्तुत करती है।

सारणी (आयतों का तार्किक मूल्यांकन)

आयत संख्या	चुना गया Nyaya तत्व	मुख्य आलोचना
21	Pramana (Valid Knowledge)	**"माबूद" के पुनर्जीवन के दावे को तर्क और प्रमाण के बिना नकारा गया।**
22	Hetu (Reason)	**बहुदेववाद के विनाशकारी प्रभाव का दावा अप्रमाणित है।**
23	Vyapti (Invariable Concomitance)	**अल्लाह के कार्यों की जांच न करने का तर्क स्वतंत्र विचारधारा के विपरीत है।**
24	Pramana (Valid Knowledge)	**एकेश्वरवाद के पक्ष में कोई प्रमाण प्रस्तुत नहीं किया गया।**
25	Upamana (Comparison)	**पूर्व पैगंबरों के संदेश के दावे को ऐतिहासिक साक्ष्यों से खारिज किया गया।**

निष्कर्ष:

इन आयतों में प्रस्तुत दावे बिना तर्क और प्रमाण के हैं। न्याय दर्शन और अन्य भारतीय दार्शनिक परंपराओं के अनुसार, इन आयतों में तर्कहीनता, ऐतिहासिक त्रुटियाँ और विचारों की असहिष्णुता स्पष्ट है। ऐसी शिक्षा मानवता के लिए अनुपयुक्त है।

Nyaya Darshan आधारित आलोचनात्मक विश्लेषण

आयत 26 (सूरा अल-अंबिया, 21:26)

अनुवाद:
"और (एहले मक्का) कहते हैं कि ख़ुदा ने (फरिश्तों को) अपनी औलाद (बेटियाँ) बना रखा है (हालाँकि) वह उससे पाक व पकीज़ा हैं बल्कि (वो फ़रिश्ते) (ख़ुदा के) मोअज़्ज़िज़ बन्दे हैं।"

Nyaya तत्व: Prameya (Object of Knowledge)
प्रतिज्ञा (Proposition):
यह दावा है कि फरिश्ते केवल ख़ुदा के सम्मानित सेवक हैं और औलाद नहीं हैं।

हेतु (Reason):
यह कथन "औलाद" के विचार को नकारता है, लेकिन तात्त्विक रूप से यह स्पष्ट नहीं करता कि "खुदा" और "फरिश्तों" के बीच संबंध क्या है।

उदाहरण (Example):
वैशेषिक दर्शन के अनुसार, पदार्थ और आत्मा को स्पष्ट रूप से परिभाषित किया जाता है। यहाँ "फरिश्ते" की आत्मिक स्थिति को अस्पष्ट रखा गया है।

उपना (Application):
यह आयत केवल "औलाद" की धारणा को नकारने तक सीमित है, लेकिन यह नहीं बताती कि "फरिश्ते" की प्रकृति क्या है और यह मनुष्यों के लिए क्यों प्रासंगिक है।

निगमन (Conclusion):
यह आयत बिना किसी स्पष्ट व्याख्या के "औलाद" के विचार को नकारती है, जो मानव तर्क और समझ के लिए अपूर्ण है।

आयत 27 (सूरा अल-अंबिया, 21:27)

अनुवाद:
"ये लोग उसके सामने बढ़कर बोल नहीं सकते और ये लोग उसी के हुक्म पर चलते हैं।"

Nyaya तत्व: Vyapti (Invariable Concomitance)
प्रतिज्ञा (Proposition):
यह दावा है कि फरिश्ते केवल ख़ुदा के आदेशों का पालन करते हैं।

हेतु (Reason):
यह विचार कि किसी भी सत्ता को केवल आदेश पालन तक सीमित रखा जाए, तात्त्विक स्वतंत्रता और स्व-चेतना को नकारता है।

उदाहरण (Example):
सांख्य दर्शन के अनुसार, हर जीव चेतना (पुरुष) और प्रकृति (प्रकृति) का संतुलन है। यहाँ फरिश्तों को स्वतंत्र चेतना से वंचित दिखाया गया है।

उपना (Application):
यह आयत मानवीय या दिव्य चेतना के स्वतंत्र पहलुओं को नकारती है, जो तात्त्विक दृष्टिकोण से त्रुटिपूर्ण है।

निगमन (Conclusion):
यह कथन केवल एक आदेश-पालन व्यवस्था को महिमामंडित करता है, जो स्वतंत्र विचार और तर्क की भावना के विपरीत है।

आयत 28 (सूरा अल-अंबिया, 21:28)

अनुवाद:
"जो कुछ उनके सामने है और जो कुछ उनके पीछे है (ग़रज़ सब कुछ) वो (ख़ुदा) जानता है और ये लोग उस शख़्स के सिवा जिससे खुदा राज़ी हो किसी की सिफारिश भी नहीं करते और ये लोग खुद उसके ख़ौफ से (हर वक़्त) डरते रहते हैं।"

Nyaya तत्व: Pramana (Valid Knowledge)
प्रतिज्ञा (Proposition):
यह दावा किया गया है कि ख़ुदा सब कुछ जानता है और उसके सेवक केवल उसके आदेश का पालन करते हैं।

हेतु (Reason):
यह कथन डर और भय को धार्मिकता का आधार बनाता है, जो कि तर्क और तात्त्विक विकास के विपरीत है।

उदाहरण (Example):
मनुस्मृति (मनु 6.92) के अनुसार, धर्म का पालन प्रेम और करुणा के आधार पर होना चाहिए, न कि भय पर।

उपना (Application):
यह आयत सेवा और भय को एक साथ रखकर धार्मिकता का अनुकरण करती है, लेकिन यह प्रेम और ज्ञान के माध्यम से आध्यात्मिकता के विकास की अनदेखी करती है।

निगमन (Conclusion):
यह आयत भय को धार्मिकता का आधार बनाकर मानवता के लिए अनुपयुक्त मार्गदर्शन देती है।

आयत 29 (सूरा अल-अंबिया, 21:29)

अनुवाद:
"और उनमें से जो कोई ये कह दे कि ख़ुदा नहीं (बल्कि) मैं माबूद हूँ तो वह (मरदूद बारगाह हुआ) हम उसको जहन्नुम की सज़ा देंगे और सरकशों को हम ऐसी ही सज़ा देते हैं।"

Nyaya तत्व: Hetu (Reason)
प्रतिज्ञा (Proposition):
यह दावा किया गया है कि ख़ुदा को छोड़कर माबूद होने का दावा करने वाले को जहन्नुम में डाल दिया जाएगा।

हेतु (Reason):
यह कथन किसी भी वैकल्पिक विचारधारा को सजा के माध्यम से दबाने का प्रयास करता है, जो तर्क और स्वतंत्रता के अधिकार का उल्लंघन है।

उदाहरण (Example):
उत्तर मीमांसा (वेदांत) के अनुसार, सभी जीव ब्रह्म के अंश हैं और किसी पर विशेष दावा नहीं किया जा सकता। यह कथन अन्य मतों को दबाने की कोशिश करता है।

उपना (Application):
यह आयत वैचारिक स्वतंत्रता को दबाकर, दंड के माध्यम से अपनी श्रेष्ठता साबित करने का प्रयास करती है।

निगमन (Conclusion):
यह आयत असहिष्णुता और दमन को बढ़ावा देती है, जो मानवता के लिए हानिकारक है।

आयत 30 (सूरा अल-अंबिया, 21:30)

अनुवादः
"जो लोग काफ़िर हो बैठे क्या उन लोगों ने इस बात पर ग़ौर नहीं किया कि आसमान और ज़मीन दोनों बस्ता (बन्द) थे तो हमने दोनों को शिगाफ़ता किया (खोल दिया) और हम ही ने जानदार चीज़ को पानी से पैदा किया इस पर भी ये लोग ईमान न लाएँगे।"

Nyaya तत्वः Pramana (Valid Knowledge)
प्रतिज्ञा (Proposition):
यह दावा है कि आसमान और ज़मीन पहले बंद थे, और ख़ुदा ने उन्हें खोला और जीवन को पानी से पैदा किया।

हेतु (Reason):
यह कथन बिना किसी भौतिक या वैज्ञानिक प्रमाण के ब्रह्मांड और जीवन की उत्पत्ति को एक ईश्वर से जोड़ता है।

उदाहरण (Example):
वैशेषिक दर्शन के अनुसार, पदार्थ (आकाश, वायु, जल, अग्नि, पृथ्वी) से संसार की उत्पत्ति होती है। "खुदा" का हस्तक्षेप यहाँ अनावश्यक और अप्रमाणित है।

उपना (Application):
यह आयत ब्रह्मांड और जीवन के उत्पत्ति के विषय में वैज्ञानिक और दार्शनिक विचारों की उपेक्षा करती है।

निगमन (Conclusion):
यह कथन बिना प्रमाण के ब्रह्मांड और जीवन की उत्पत्ति का दावा करता है, जो तात्विक और वैज्ञानिक दृष्टिकोण से त्रुटिपूर्ण है।

सारणी (आयतों का तार्किक मूल्यांकन)

आयत संख्या	चुना गया Nyaya तत्व	मुख्य आलोचना
26	Prameya (Object of Knowledge)	**फरिश्तों की स्थिति अस्पष्ट और मानवता के लिए अप्रासंगिक है।**
27	Vyapti (Invariable Concomitance)	**स्वतंत्र चेतना और तात्त्विक स्वतंत्रता का नकार।**
28	Pramana (Valid Knowledge)	**धार्मिकता को भय के आधार पर स्थापित करना तात्त्विक दृष्टि से त्रुटिपूर्ण है।**
29	Hetu (Reason)	**वैकल्पिक विचारों को दमन और दंड के माध्यम से नकारना असहिष्णु है।**
30	Pramana (Valid Knowledge)	**ब्रह्मांड और जीवन की उत्पत्ति का दावा बिना प्रमाण के प्रस्तुत किया गया।**

निष्कर्ष:

इन आयतों में प्रस्तुत विचार स्वतंत्र तर्क और वैचारिक स्वतंत्रता के खिलाफ हैं। यह मानवता को भय, दमन, और असहिष्णुता की ओर ले जाने वाले संदेश देते हैं। न्याय दर्शन और भारतीय दर्शन के अन्य शास्त्रों के अनुसार, ये आयतें तार्किक और तात्त्विक रूप से कमजोर हैं।

Nyaya Darshan आधारित आलोचनात्मक विश्लेषण

आयत 31 (सूरा अल-अंबिया, 21:31)

अनुवादः
"और हम ही ने ज़मीन पर भारी बोझल पहाड़ बनाए ताकि ज़मीन उन लोगों को लेकर किसी तरफ झुक न पड़े और हम ने ही उसमें लम्बे-चैड़े रास्ते बनाए ताकि ये लोग अपने-अपने मंज़िलें मक़सूद को जा पहुँचे।"

Nyaya तत्व: Pramana (Valid Knowledge)

प्रतिज्ञा (Proposition):

यह दावा है कि पहाड़ों को ज़मीन के स्थायित्व और मानव के मार्गदर्शन के लिए बनाया गया।

हेतु (Reason):

यह कथन भौतिक विज्ञान के सिद्धांतों के विपरीत है। भूगर्भीय विज्ञान (Geology) के अनुसार, पहाड़ पृथ्वी के भीतर प्लेटों के टकराव के परिणामस्वरूप बने हैं, न कि पृथ्वी को स्थिर रखने के लिए।

उदाहरण (Example):

वैशेषिक दर्शन में पृथ्वी को एक स्वतंत्र भौतिक इकाई माना गया है, जिसमें संतुलन और संरचना प्राकृतिक कारणों से होती है। पहाड़ों को "ज़मीन को झुकने से रोकने" के रूप में प्रस्तुत करना वैज्ञानिक रूप से अनुचित है।

उपना (Application):

यह आयत प्राकृतिक भूगर्भीय प्रक्रियाओं को नजरअंदाज करती है और इसे एक ईश्वर द्वारा नियंत्रित घटना के रूप में प्रस्तुत करती है, जो तथ्यात्मक रूप से त्रुटिपूर्ण है।

निगमन (Conclusion):

यह दावा वैज्ञानिक और तात्त्विक दृष्टि से असत्य और अप्रमाणित है। पहाड़ों का निर्माण प्राकृतिक प्रक्रियाओं से होता है, न कि किसी ईश्वरीय उद्देश्य से।

आयत 32 (सूरा अल-अंबिया, 21:32)

अनुवादः

"और हम ही ने आसमान को छत बनाया जो हर तरह महफ़ूज़ है और ये लोग उसकी आसमानी निशानियों से मुँह फेर रहे हैं।"

Nyaya तत्व: Vyapti (Invariable Concomitance)

प्रतिज्ञा (Proposition):

आसमान को "छत" के रूप में प्रस्तुत किया गया है, जो हर तरह सुरक्षित है।

हेतु (Reason):

यह कथन खगोलीय तथ्यों के विपरीत है। आधुनिक खगोल विज्ञान के अनुसार, "आसमान" कोई भौतिक छत नहीं है, बल्कि वायुमंडल और ब्रह्मांडीय अंतरिक्ष का हिस्सा है।

उदाहरण (Example):
सांख्य दर्शन में प्रकृति को स्पष्ट रूप से परिभाषित किया गया है। यहां "आसमान" को छत के रूप में दिखाना तात्त्विक और वैज्ञानिक दृष्टिकोण से गलत है।

उपना (Application):
आसमान को "छत" कहना एक भ्रामक उपमा है, जो वास्तविक वैज्ञानिक समझ को नकारता है।

निगमन (Conclusion):
यह आयत खगोलीय विज्ञान और तात्त्विक तर्क से असंगत है। यह मानवता को भ्रमित करने वाला संदेश देती है।

आयत 33 (सूरा अल-अंबिया, 21:33)

अनुवाद:
"और वही वह (क़ादिरे मुतलक़) है जिसने रात और दिन और आफ़ताब और माहताब को पैदा किया कि सब के सब एक (एक) आसमान में पैर कर चक्कर लगा रहे हैं।"

Nyaya तत्व: Prameya (Object of Knowledge)
प्रतिज्ञा (Proposition):
सूरज, चाँद, और अन्य खगोलीय पिंड एक ही आसमान में चक्कर लगा रहे हैं।

हेतु (Reason):
यह कथन खगोलीय तथ्यों के विपरीत है। आधुनिक विज्ञान के अनुसार, पृथ्वी सूर्य के चारों ओर घूमती है, जबकि चंद्रमा पृथ्वी का उपग्रह है।

उदाहरण (Example):
वैशेषिक दर्शन में खगोलीय पिंडों को उनके स्वाभाविक गति और प्रकृति के अनुसार समझाया गया है। यहाँ यह स्पष्ट नहीं है कि "एक आसमान" क्या दर्शाता है।

उपना (Application):
यह आयत वैज्ञानिक दृष्टिकोण से त्रुटिपूर्ण है क्योंकि यह खगोलीय पिंडों की वास्तविक गति को नहीं दर्शाती।

निगमन (Conclusion):
यह आयत खगोलीय सत्य और तर्कसंगत व्याख्या के खिलाफ है। यह भौतिक विज्ञान की समझ को विकृत करती है।

आयत 34 (सूरा अल-अंबिया, 21:34)

अनुवाद:
"और (ऐ रसूल) हमने तुमसे पहले भी किसी फर्द व बशर को सदा की ज़िन्दगी नहीं दी तो क्या अगर तुम मर जाओगे तो ये लोग हमेशा जिया ही करेंगे।"

Nyaya तत्व: Hetu (Reason)
प्रतिज्ञा (Proposition):
यह दावा किया गया है कि किसी इंसान को सदा की ज़िंदगी नहीं दी गई।

हेतु (Reason):
यह कथन सत्य प्रतीत होता है, लेकिन यह आत्मा और शरीर के संबंध को नकार देता है। वेदांत दर्शन के अनुसार, आत्मा अनश्वर है, और पुनर्जन्म का चक्र चलता रहता है।

उदाहरण (Example):
भगवद गीता (2.20) में कहा गया है कि आत्मा कभी नहीं मरती, न ही यह जन्म लेती है। इस आयत में केवल शरीर की नश्वरता पर जोर दिया गया है।

उपना (Application):
यह आयत केवल शरीर की मृत्यु तक सीमित है और आत्मा की अनश्वरता के तत्व को अनदेखा करती है।

निगमन (Conclusion):
यह कथन आध्यात्मिक दृष्टि से अधूरा और त्रुटिपूर्ण है।

आयत 35 (सूरा अल-अंबिया, 21:35)

अनुवादः

"(हर शख़्स एक न एक दिन) मौत का मज़ा चखने वाला है और हम तुम्हें मुसीबत व राहत में इम्तेहान की ग़रज़ से आज़माते हैं और (आख़िर कार) हमारी ही तरफ लौटाए जाओगे।"

Nyaya तत्व: Pramana (Valid Knowledge)

प्रतिज्ञा (Proposition):

यह दावा है कि हर व्यक्ति मृत्यु का सामना करेगा और ख़ुदा की ओर लौटेगा।

हेतु (Reason):

यह आयत पुनर्जन्म के सिद्धांत को नकारती है। सांख्य और वेदांत दर्शन के अनुसार, आत्मा पुनर्जन्म के चक्र से गुजरती है।

उदाहरण (Example):

भगवद गीता (2.27) में कहा गया है, "जो जन्म लेता है, वह मृत्यु को प्राप्त होता है और जो मृत्यु को प्राप्त होता है, वह पुनर्जन्म लेता है।"

उपना (Application):

यह आयत पुनर्जन्म के सिद्धांत की अनदेखी करते हुए केवल मृत्यु के बाद एक दिशा में जाने का दावा करती है।

निगमन (Conclusion):

यह कथन तात्त्विक और आध्यात्मिक दृष्टि से अधूरा और अप्रामाणिक है।

सारणी (आयतों का तार्किक मूल्यांकन)

आयत संख्या	चुना गया Nyaya तत्व	मुख्य आलोचना
31	Pramana (Valid Knowledge)	**पहाड़ों के अस्तित्व को गलत तरीके से प्रस्तुत किया गया।**
32	Vyapti (Invariable Concomitance)	**आसमान को "छत" के रूप में दिखाना वैज्ञानिक रूप से गलत है।**

33	Prameya (Object of Knowledge)	**खगोलीय पिंडों की गति का त्रुटिपूर्ण विवरण।**
34	Hetu (Reason)	**आत्मा की अनश्वरता को नकार कर केवल शरीर की नश्वरता पर जोर।**
35	Pramana (Valid Knowledge)	**पुनर्जन्म के सिद्धांत को अनदेखा करना।**

निष्कर्ष:

इन आयतों में प्रस्तुत विचार वैज्ञानिक और दार्शनिक दृष्टिकोण से त्रुटिपूर्ण हैं। यह मानवता को भ्रमित करने वाले और तात्त्विक सत्य को नकारने वाले संदेश देते हैं। न्याय दर्शन और भारतीय शास्त्रों के अनुसार, यह विचार न केवल अधूरे हैं, बल्कि मानवता के लिए अनुचित भी हैं।

Nyaya Darshan आधारित आलोचनात्मक विश्लेषण

आयत 36 (सूरा अल-अंबिया, 21:36)

अनुवाद:
"और (ऐ रसूल) जब तुम्हें कुफ़्फ़ार देखते हैं तो बस तुमसे मसखरापन करते हैं कि क्या यही हज़रत हैं जो तुम्हारे माबूदों को (बुरी तरह) याद करते हैं हालाँकि ये लोग ख़ुद ख़ुदा की याद से इन्कार करते हैं।"

Nyaya तत्व: Prameya (Object of Knowledge)
प्रतिज्ञा (Proposition):
यह दावा किया गया है कि "कुफ़्फ़ार" पैग़म्बर का मज़ाक उड़ाते हैं और ईश्वर की याद से इंकार करते हैं।

हेतु (Reason):
इस आयत में पैग़म्बर की आलोचना को मज़ाक और काफिरों के दोष के रूप में दिखाया गया है। परंतु, यह आलोचना को अस्वीकार करने का तर्कसंगत आधार प्रदान नहीं करता। यह किसी भी असहमति को "ईश्वर से इंकार" के रूप में सामान्यीकृत करता है, जो तर्क और विचार की स्वतंत्रता को बाधित करता है।

उदाहरण (Example):
न्याय दर्शन में कहा गया है कि किसी भी कथन का परीक्षण तर्क और प्रमाण के आधार पर किया जाना

चाहिए। यहाँ "मज़ाक उड़ाने" का कारण स्पष्ट नहीं किया गया है और न ही इसका खंडन किसी ठोस तर्क से किया गया है।

उपना (Application):
यह आयत विचारधारा पर सवाल उठाने या आलोचना करने वाले को "कुफ़्फ़ार" कहकर उनका उपहास करती है, जो न्याय दर्शन के स्वतंत्र सोच और सत्य की खोज के सिद्धांतों के विपरीत है।

निगमन (Conclusion):
यह आयत तर्क और विचार की स्वतंत्रता को बाधित करती है और किसी भी असहमति को नकारात्मक रूप में चित्रित करती है।

आयत 37 (सूरा अल-अंबिया, 21:37)

अनुवादः
"आदमी तो बड़ा जल्दबाज़ पैदा किया गया है। मैं अनक़रीब ही तुम्हें अपनी (कुदरत की) निशानियाँ दिखाऊँगा तो तुम मुझसे जल्दी की (धूम) न मचाओ।"

Nyaya तत्वः Hetu (Reason)
प्रतिज्ञा (Proposition):
मनुष्य को "जल्दबाज़" कहा गया है और ईश्वर की निशानियों को दिखाने का वादा किया गया है।

हेतु (Reason):
यह आयत केवल यह कहती है कि मनुष्य अधीर है, लेकिन यह स्पष्ट नहीं करती कि "ईश्वर की निशानियाँ" क्या हैं और उन्हें देखने का मानदंड क्या होगा। तात्त्विक दृष्टि से, यह कथन अस्पष्ट और प्रमाणहीन है।

उदाहरण (Example):
वैशेषिक दर्शन के अनुसार, किसी भी दावे को प्रमाण और तर्क के साथ सिद्ध करना आवश्यक है। यहाँ केवल भविष्य में होने वाली घटनाओं की बात की गई है, लेकिन कोई ठोस प्रमाण या तर्क प्रस्तुत नहीं किया गया है।

उपना (Application):
यह आयत मानव प्रकृति को दोष देने और अस्पष्ट वादे करने तक सीमित है। यह किसी ठोस तात्त्विक आधार पर खरा नहीं उतरती।

निगमन (Conclusion):
यह कथन केवल एक भावनात्मक अपील है और तर्कसंगत दृष्टिकोण से कमजोर है।

आयत 38 (सूरा अल-अंबिया, 21:38)

अनुवाद:
"और लुत्फ़ तो ये है कि कहते हैं कि अगर सच्चे हो तो ये क़यामत का वायदा कब (पूरा) होगा।"

Nyaya तत्व: Vyapti (Invariable Concomitance)
प्रतिज्ञा (Proposition):
यह दावा किया गया है कि "कुफ़्फ़ार" क़यामत के समय के बारे में पूछते हैं।

हेतु (Reason):
इस आयत में प्रश्न पूछने को अविश्वास का संकेत माना गया है। लेकिन यह तात्त्विक दृष्टि से गलत है, क्योंकि प्रश्न पूछना और सत्य जानने की इच्छा रखना किसी भी व्यक्ति का अधिकार है।

उदाहरण (Example):
न्याय दर्शन में प्रश्न पूछने और सत्य तक पहुँचने को ज्ञान का प्रमुख साधन माना गया है। यहाँ "क़यामत" का कोई स्पष्ट प्रमाण या तर्क नहीं दिया गया है।

उपना (Application):
यह आयत किसी भी तार्किक पूछताछ को खारिज कर देती है और इसे "लुत्फ़ उठाने" जैसा दर्शाती है, जो कि न्याय दर्शन के तर्कसंगत दृष्टिकोण के विपरीत है।

निगमन (Conclusion):
यह आयत सत्य जानने के प्रयास को हतोत्साहित करती है और तर्क और ज्ञान की महत्ता को नजरअंदाज करती है।

आयत 39 (सूरा अल-अंबिया, 21:39)

अनुवाद:

"और जो लोग काफ़िर हो बैठे काश उस वक़्त की हालत से आगाह होते (कि जहन्नुम की आग में खड़े होंगे) और न अपने चेहरों से आग को हटा सकेंगे और न अपनी पीठ से और न उनकी मदद की जाएगी।"

Nyaya तत्व: Pramana (Valid Knowledge)

प्रतिज्ञा (Proposition):

यह दावा किया गया है कि "काफ़िर" जहन्नुम की आग से बच नहीं सकते।

हेतु (Reason):

इस आयत में कोई प्रमाण नहीं है जो यह दर्शाए कि "जहन्नुम" वास्तव में मौजूद है और "काफ़िरों" को इसका सामना करना होगा। यह कथन भय का निर्माण करता है और सत्यापन की प्रक्रिया से रहित है।

उदाहरण (Example):

वेदांत दर्शन में मोक्ष और पुनर्जन्म के चक्र का वर्णन है, लेकिन "जहन्नुम" जैसी किसी अनंत पीड़ा का कोई उल्लेख नहीं है।

उपना (Application):

यह आयत केवल भय उत्पन्न करती है और सत्यापन योग्य तर्क प्रदान नहीं करती। यह आत्मा की प्रकृति और उसके उद्देश्यों के बारे में आध्यात्मिक दृष्टिकोण से असंगत है।

निगमन (Conclusion):

यह कथन केवल डर फैलाने के लिए है और तात्त्विक दृष्टि से अपर्याप्त है।

आयत 40 (सूरा अल-अंबिया, 21:40)

अनुवाद:

"(क़यामत कुछ जता कर तो आने से रही) बल्कि वह तो अचानक उन पर आ पड़ेगी और उन्हें हक्का बक्का कर देगी फिर उस वक़्त उसमें न उसके हटाने की मजाल होगी और न उन्हें दी ही जाएगी।"

Nyaya तत्व: Hetu (Reason)

प्रतिज्ञा (Proposition):

क़यामत अचानक आएगी और कोई इससे बच नहीं सकेगा।

हेतु (Reason):
यह कथन भविष्य की एक घटना का वर्णन करता है, लेकिन इसे सत्यापित करने या समझने का कोई आधार प्रस्तुत नहीं करता।

उदाहरण (Example):
न्याय दर्शन में भविष्यवाणी का सत्यापन प्रमाण और तर्क पर आधारित होता है। यहाँ कोई ठोस प्रमाण प्रस्तुत नहीं किया गया है।

उपना (Application):
यह आयत केवल एक अप्रत्याशित घटना के रूप में "क़यामत" को प्रस्तुत करती है और इसे सत्यापित करने का कोई साधन नहीं देती।

निगमन (Conclusion):
यह कथन भविष्य की एक अस्पष्ट और अप्रमाणित घटना पर आधारित है, जो तर्कसंगत दृष्टिकोण से कमजोर है।

सारणी (आयतों का तार्किक मूल्यांकन)

आयत संख्या	चुना गया Nyaya तत्व	मुख्य आलोचना
36	Prameya (Object of Knowledge)	असहमति को नकारात्मक रूप में चित्रित करना।
37	Hetu (Reason)	अस्पष्ट वादे और प्रमाण का अभाव।
38	Vyapti (Invariable Concomitance)	तार्किक प्रश्न पूछने को खारिज करना।
39	Pramana (Valid Knowledge)	भय आधारित कथन और सत्यापन का अभाव।
40	Hetu (Reason)	भविष्यवाणी के लिए कोई प्रमाण प्रस्तुत नहीं करना।

निष्कर्ष:

इन आयतों में प्रस्तुत विचार सत्यापन और तर्क के अभाव में मानवता के लिए अनुपयुक्त हैं। ये आयतें स्वतंत्र सोच, तर्क और ज्ञान की प्रक्रिया को बाधित करती हैं और भय आधारित दृष्टिकोण प्रस्तुत करती हैं, जो न्याय दर्शन और भारतीय शास्त्रों के सिद्धांतों के विरुद्ध है।

Nyaya Darshan आधारित आलोचनात्मक विश्लेषण

आयत 41 (सूरा अल-अंबिया, 21:41)

अनुवादः
"(ऐ रसूल) कुछ तुम ही नहीं, तुमसे पहले पैग़म्बरों के साथ मसख़रापन किया जा चुका है, तो उन पैग़म्बरों से मसख़रापन करने वालों को उस सख़्त अज़ाब ने आ घेर लिया जिसकी वह हँसी उड़ाया करते थे।"

Nyaya तत्व: Prameya (Object of Knowledge)
प्रतिज्ञा (Proposition):
मजाक उड़ाने वालों को ईश्वर ने "सख्त अज़ाब" दिया।

हेतु (Reason):
यह आयत उन लोगों को दोषी ठहराती है जो पैग़म्बरों का मजाक उड़ाते हैं और कहती है कि वे ईश्वर के अज़ाब से घिर गए। लेकिन यह दावा केवल डर पैदा करने के लिए है और इसमें कोई तार्किक प्रमाण या ऐतिहासिक साक्ष्य नहीं है।

उदाहरण (Example):
न्याय दर्शन के अनुसार, किसी भी घटना का प्रमाण या सत्यापन आवश्यक है। यहाँ "अज़ाब" और "मजाक उड़ाने वालों के नतीजे" के बारे में कोई प्रमाण प्रस्तुत नहीं किया गया है।

उपना (Application):
यह कथन केवल भय उत्पन्न करता है और असहमति को अपराध के रूप में प्रस्तुत करता है। यह तात्त्विक दृष्टि से विचारधारा पर सवाल उठाने वाले लोगों को चुप कराने की प्रवृत्ति है।

निगमन (Conclusion):
यह कथन सत्यापन योग्य प्रमाण के अभाव में केवल भावनात्मक दबाव का उपयोग करता है।

आयत 42 (सूरा अल-अंबिया, 21:42)

अनुवादः
"(ऐ रसूल) तुम उनसे पूछो तो कि ख़ुदा (के अज़ाब) से (बचाने में) रात को या दिन को तुम्हारा कौन पहरा दे सकता है? उस पर डरना तो दरकिनार, बल्कि ये लोग अपने परवरदिगार की याद से मुँह फेरते हैं।"

Nyaya तत्वः Vyapti (Invariable Concomitance)
प्रतिज्ञा (Proposition):
ईश्वर के अज़ाब से कोई बचाने वाला नहीं है।

हेतु (Reason):
यह आयत एक प्रश्न के रूप में दावा करती है कि कोई ईश्वर के अज़ाब से बचा नहीं सकता। यह तर्क सत्यापन योग्य नहीं है, क्योंकि "अज़ाब" को प्रमाणित नहीं किया गया है।

उदाहरण (Example):
न्याय दर्शन के अनुसार, किसी भी दावे को तार्किक प्रमाणों द्वारा सिद्ध किया जाना चाहिए। यहाँ "अज़ाब" का कोई अनुभवजन्य प्रमाण या वैचारिक आधार नहीं दिया गया।

उपना (Application):
यह कथन केवल भय उत्पन्न करता है और किसी भी विचारधारा के लिए स्वतंत्र तर्क को हतोत्साहित करता है।

निगमन (Conclusion):
यह आयत सत्यापन योग्य तर्क और प्रमाण के अभाव में केवल डर फैलाने के लिए है।

आयत 43 (सूरा अल-अंबिया, 21:43)

अनुवादः
"क्या हमारे सिवा उनके कुछ और परवरदिगार हैं कि जो उनको (हमारे अज़ाब से) बचा सकते हैं? (वह क्या बचाएँगे) ये लोग ख़ुद अपनी तो मदद कर ही नहीं सकते और न हमारे अज़ाब से उन्हें पनाह दी जाएगी।"

Nyaya तत्वः Pramana (Valid Knowledge)
प्रतिज्ञा (Proposition):
ईश्वर के अलावा कोई भी "अज़ाब" से बचा नहीं सकता।

हेतु (Reason):
इस कथन में ईश्वर के अलावा किसी और के परवरदिगार होने की संभावना को खारिज किया गया है। लेकिन इसमें यह प्रमाणित नहीं किया गया कि "अज़ाब" क्या है, इसका स्वरूप क्या है, और अन्य परवरदिगारों का अस्तित्व क्यों नहीं हो सकता।

उदाहरण (Example):
वैदिक दर्शन में कई देवताओं का उल्लेख है, जो विभिन्न शक्तियों और प्रकृति के पहलुओं का प्रतिनिधित्व करते हैं। यह एक बहुलवादी दृष्टिकोण है, जबकि यह आयत केवल एक ईश्वर के अस्तित्व को स्थापित करने का दावा करती है, लेकिन कोई तात्त्विक आधार नहीं देती।

उपना (Application):
यह आयत केवल एक विशेष विचारधारा को स्थापित करने का प्रयास करती है और अन्य संभावनाओं को खारिज करती है।

निगमन (Conclusion):
यह कथन केवल पूर्वधारणाओं पर आधारित है और इसमें तर्क या प्रमाण की कमी है।

आयत 44 (सूरा अल-अंबिया, 21:44)

अनुवाद:
"बल्कि हम ही से उनको और उनके बुज़ुर्गों को आराम व चैन रहा, यहाँ तक कि उनकी उमरें बढ़ गईं, तो फिर क्या ये लोग नहीं देखते कि हम रूए ज़मीन को चारों तरफ से क़ब्ज़ा करते और उसको फतेह करते चले आते हैं, तो क्या (अब भी यही लोग कुफ़्फ़ारे मक्का) ग़ालिब और वर हैं?"

Nyaya तत्व: Vyapti (Invariable Concomitance)
प्रतिज्ञा (Proposition):
ईश्वर ही आराम और चैन प्रदान करता है और काफिरों को नष्ट करता है।

हेतु (Reason):
इस आयत में ईश्वर के द्वारा ज़मीन पर कब्ज़ा और फतेह का दावा किया गया है, लेकिन इसका कोई तात्त्विक या ऐतिहासिक प्रमाण नहीं दिया गया।

उदाहरण (Example):
भारतीय दर्शन के अनुसार, प्रकृति और मानव प्रयास दोनों के परिणामस्वरूप ही सामाजिक और भौगोलिक परिवर्तन होते हैं। यह आयत मानव प्रयास की भूमिका को नकारती है।

उपना (Application):
यह कथन केवल दैवी हस्तक्षेप पर आधारित है और इसमें तात्त्विक और व्यावहारिक प्रमाण का अभाव है।

निगमन (Conclusion):
यह आयत केवल विश्वास के आधार पर है और इसमें तर्क या प्रमाण का अभाव है।

आयत 45 (सूरा अल-अंबिया, 21:45)

अनुवादः
"(ऐ रसूल) तुम कह दो कि मैं तो बस तुम लोगों को 'वही' के मुताबिक़ (अज़ाब से) डराता हूँ, (मगर तुम लोग गोया बहरे हो) और बहरों को जब डराया जाता है तो वह पुकारने ही को नहीं सुनते (डरें क्या ख़ाक)।"

Nyaya तत्वः Prameya (Object of Knowledge)
प्रतिज्ञा (Proposition):
पैगंबर केवल "वही" के माध्यम से लोगों को अज़ाब से डराने का कार्य करते हैं।

हेतु (Reason):
इस आयत में केवल "वही" के आधार पर सत्यता का दावा किया गया है। लेकिन "वही" का स्रोत, प्रमाणिकता, और इसका सत्यापन प्रस्तुत नहीं किया गया।

उदाहरण (Example):
न्याय दर्शन में किसी भी दावे को प्रमाण के आधार पर परखा जाता है। केवल "वही" का उल्लेख करना पर्याप्त नहीं है, जब तक कि इसे सत्यापित न किया जाए।

उपना (Application):
यह आयत उन लोगों की आलोचना करती है जो पैगंबर की बात को नहीं सुनते, लेकिन यह यह नहीं बताती कि "वही" का सत्यापन कैसे किया जाए।

निगमन (Conclusion):
यह आयत केवल पूर्वधारणाओं पर आधारित है और तर्क या सत्यापन प्रक्रिया का अभाव है।

सारणी (आयतों का तार्किक मूल्यांकन)

आयत संख्या	चुना गया Nyaya तत्व	मुख्य आलोचना
41	Prameya (Object of Knowledge)	**तर्क और प्रमाण के बिना भय उत्पन्न करना।**
42	Vyapti (Invariable Concomitance)	**ईश्वर के "अज़ाब" का कोई प्रमाण नहीं।**
43	Pramana (Valid Knowledge)	**अन्य देवताओं या परवरदिगारों की संभावना को खारिज करना।**
44	Vyapti (Invariable Concomitance)	**दैवी हस्तक्षेप का दावा, परंतु प्रमाण का अभाव।**
45	Prameya (Object of Knowledge)	**"वही" के सत्यापन का अभाव।**

निष्कर्ष:

इन आयतों में प्रस्तुत विचार तर्क और प्रमाण से परे केवल विश्वास और भय पर आधारित हैं। ये विचारधारा पर सवाल उठाने और स्वतंत्र चिंतन को हतोत्साहित करते हैं। न्याय दर्शन के दृष्टिकोण से, ये कथन तात्त्विक और तार्किक रूप से अपर्याप्त हैं और मानवता के लिए अनुपयुक्त हैं।

Nyaya Darshan आधारित आलोचनात्मक विश्लेषण

आयत 46 (सूरा अल-अंबिया, 21:46)

अनुवादः
"और (ऐ रसूल) अगर कहीं उनको तुम्हारे परवरदिगार के अज़ाब की ज़रा सी हवा भी लग गई, तो बेसाख्ता बोल उठें, 'हाय अफसोस! वाकई हम ही ज़ालिम थे।'"

Nyaya तत्व: Prameya (Object of Knowledge)

प्रतिज्ञा (Proposition):

ईश्वर का अज़ाब इतना कठोर होगा कि लोग स्वीकार करेंगे कि वे ही ज़ालिम थे।

हेतु (Reason):

यह कथन केवल भय उत्पन्न करता है और लोगों के लिए कोई तर्कसंगत प्रमाण प्रस्तुत नहीं करता कि "अज़ाब" क्यों और कैसे आएगा।

उदाहरण (Example):

न्याय दर्शन के अनुसार, किसी भी दावे को तर्क और अनुभवजन्य साक्ष्य से सिद्ध करना चाहिए। यहाँ "अज़ाब की हवा" की कल्पना मात्र प्रस्तुत की गई है, लेकिन इसका वास्तविक अनुभव या प्रमाण नहीं है।

उपना (Application):

यह कथन केवल लोगों को डराने के लिए है और इसमें किसी भी तात्त्विक विश्लेषण या तार्किक संरचना का अभाव है।

निगमन (Conclusion):

यह कथन केवल भावनात्मक दबाव के लिए उपयोग किया गया है और तार्किक आधार पर अस्वीकार्य है।

आयत 47 (सूरा अल-अंबिया, 21:47)

अनुवाद:

"और क़यामत के दिन तो हम (बंदों के भले-बुरे आमाल तौलने के लिए) इंसाफ़ की तराज़ू में खड़ी कर देंगे। फिर किसी शख़्स पर कुछ भी ज़ुल्म न किया जाएगा, और अगर राई के दाने के बराबर भी किसी का (अमल) होगा, तो हम उसे ला हाज़िर करेंगे, और हम हिसाब करने के लिए बहुत काफ़ी हैं।"

Nyaya तत्व: Pramana (Valid Knowledge)

प्रतिज्ञा (Proposition):

क़यामत के दिन हर इंसान का हिसाब न्यायपूर्वक किया जाएगा।

हेतु (Reason):

यह आयत दावा करती है कि एक अदृश्य और अनदेखे "क़यामत" के दिन हर कर्म का हिसाब होगा। लेकिन यह "क़यामत" के अस्तित्व, "तराज़ू" और न्याय प्रक्रिया का कोई प्रमाण प्रस्तुत नहीं करती।

उदाहरण (Example):
वैदिक दर्शन के अनुसार, कर्मफल का सिद्धांत पुनर्जन्म और प्रकृति के नियमों के आधार पर चलता है। इसमें किसी "तराज़ू" या दिन विशेष पर न्याय की कल्पना नहीं है।

उपना (Application):
यह आयत "क़यामत" के नाम पर न्याय का दावा करती है, लेकिन यह एक सैद्धांतिक कल्पना है, जिसे तर्क और प्रमाण द्वारा सत्यापित नहीं किया जा सकता।

निगमन (Conclusion):
यह कथन न्याय के सिद्धांत को स्थापित करने का प्रयास करता है, लेकिन इसमें तार्किक प्रमाण का अभाव है।

आयत 48 (सूरा अल-अंबिया, 21:48)

अनुवादः
"और हमने ही यकीनन मूसा और हारून को (हक़ व बातिल की) जुदा करने वाली किताब (तौरेत) और परहेज़गारों के लिए अज़सरतापा नूर और नसीहत अता की।"

Nyaya तत्वः Pramana (Valid Knowledge)
प्रतिज्ञा (Proposition):
मूसा और हारून को तौरेत दी गई, जो हक़ और बातिल को अलग करने वाली किताब है।

हेतु (Reason):
यह आयत तौरेत को "हक़ और बातिल" को अलग करने वाली किताब के रूप में प्रस्तुत करती है। लेकिन यह नहीं बताती कि "हक़ और बातिल" के मापदंड क्या हैं और इसे सार्वभौमिक सत्य के रूप में कैसे स्वीकार किया जाए।

उदाहरण (Example):
वैदिक ग्रंथों में सत्य और असत्य का स्पष्ट तात्त्विक विवेचन है, जैसे उपनिषदों और भगवद्गीता में। यहाँ केवल एक किताब का दावा किया गया है, लेकिन इसका कोई तार्किक आधार या प्रमाण नहीं है।

उपना (Application):
यह आयत केवल एक धार्मिक ग्रंथ की श्रेष्ठता का दावा करती है, लेकिन इसके समर्थन में कोई प्रमाण या तार्किक आधार प्रस्तुत नहीं करती।

निगमन (Conclusion):
यह कथन केवल एक धार्मिक दृष्टिकोण पर आधारित है और तार्किक रूप से अधूरा है।

आयत 49 (सूरा अल-अंबिया, 21:49)

अनुवाद:
"जो बिना देखे अपने परवरदिगार से ख़ौफ खाते हैं और ये लोग रोज़े क़यामत से भी डरते हैं।"

Nyaya तत्व: Prameya (Object of Knowledge)
प्रतिज्ञा (Proposition):
परहेज़गार लोग ईश्वर और क़यामत के दिन से डरते हैं।

हेतु (Reason):
यह कथन ईश्वर और क़यामत के भय को परहेज़गारी का आधार मानता है। लेकिन यह स्पष्ट नहीं करता कि केवल डर के आधार पर परहेज़गारी क्यों और कैसे स्थापित होगी।

उदाहरण (Example):
वैदिक दर्शन में परहेज़गारी (धर्म) को भय नहीं, बल्कि नैतिकता, ज्ञान, और कर्म के आधार पर परिभाषित किया गया है। भय पर आधारित आस्था दीर्घकालिक नहीं होती।

उपना (Application):
यह आयत भय को आस्था का मूल आधार बनाती है, जो मानव स्वतंत्रता और नैतिकता को कमजोर करता है।

निगमन (Conclusion):
यह कथन भय पर आधारित धर्म का समर्थन करता है, जो न्याय दर्शन के अनुसार अनुचित है।

आयत 50 (सूरा अल-अंबिया, 21:50)

अनुवाद:
"और ये (कुरआन भी) एक बाबरकत तज़किरा है, जिसको हमने उतारा है। तो क्या तुम लोग इसको नहीं मानते?"

Nyaya तत्व: Pramana (Valid Knowledge)

प्रतिज्ञा (Proposition):
कुरआन एक बाबरकत तज़किरा (धार्मिक उपदेश) है।

हेतु (Reason):
यह आयत केवल कुरआन को बाबरकत और दिव्य उपदेश मानने का आग्रह करती है। लेकिन यह नहीं बताती कि इसे प्रमाणिक और सार्वभौमिक सत्य के रूप में क्यों और कैसे स्वीकार किया जाए।

उदाहरण (Example):
भारतीय शास्त्रों में ज्ञान को सत्यापित करने के लिए तर्क, अनुभव, और शास्त्रों के सामंजस्य की आवश्यकता होती है। केवल एक किताब के "बाबरकत" होने का दावा करना पर्याप्त नहीं है।

उपना (Application):
यह आयत केवल धार्मिक विश्वास पर आधारित है और इसमें तर्क और प्रमाण का अभाव है।

निगमन (Conclusion):
यह कथन तर्कसंगत विश्लेषण की कसौटी पर खरा नहीं उतरता।

सारणी (आयतों का तार्किक मूल्यांकन)

आयत संख्या	चुना गया Nyaya तत्व	मुख्य आलोचना
46	Prameya (Object of Knowledge)	**"अज़ाब" का कोई प्रमाण प्रस्तुत नहीं किया गया।**
47	Pramana (Valid Knowledge)	**"क़यामत" और "तराज़ू" का तात्त्विक आधार नहीं।**
48	Pramana (Valid Knowledge)	**"तौरेत" की श्रेष्ठता का कोई तार्किक आधार नहीं।**
49	Prameya (Object of Knowledge)	**भय को धर्म का आधार मानना तर्कसंगत नहीं।**
50	Pramana (Valid Knowledge)	**कुरआन के दावों का सत्यापन प्रस्तुत नहीं किया गया।**

निष्कर्ष:

इन आयतों में प्रस्तुत विचार तर्क और प्रमाण के अभाव में केवल विश्वास और भय पर आधारित हैं। यह मानवता को नैतिकता और ज्ञान की बजाय डर के अधीन रखने का प्रयास करता है। न्याय दर्शन के अनुसार, यह दृष्टिकोण तार्किक और नैतिक रूप से अनुचित है।

Nyaya Darshan आधारित आलोचनात्मक विश्लेषण

आयत 51 (सूरा अल-अंबिया, 21:51)

अनुवाद:
"और इसमें भी शक नहीं कि हमने इबराहीम को पहले ही से फ़हेम सलीम अता की थी और हम उन (की हालत) से ख़ूब वाकिफ़ थे।"

Nyaya तत्व: Prameya (Object of Knowledge)
प्रतिज्ञा (Proposition):
इबराहीम को ईश्वर द्वारा विशेष ज्ञान और समझ दी गई थी।

हेतु (Reason):
यह आयत दावा करती है कि इबराहीम को ईश्वर ने विशेष ज्ञान दिया था, लेकिन यह नहीं बताती कि इस ज्ञान का स्रोत क्या था और यह कैसे सत्यापित किया जा सकता है।

उदाहरण (Example):
वैदिक ग्रंथों में ज्ञान और समग्रता का विचार मानव अनुभव, तर्क और विवेक से जुड़ा हुआ है। यहाँ केवल एक व्यक्तिगत दावे का उल्लेख किया गया है, जिसे प्रमाणित नहीं किया गया है।

उपना (Application):
इस कथन में कोई ठोस प्रमाण या तात्त्विक विश्लेषण प्रस्तुत नहीं किया गया है कि इबराहीम को किस प्रकार का "फ़हेम सलीम" मिला था।

निगमन (Conclusion):
यह कथन केवल विश्वास और दावे पर आधारित है, और इसमें कोई तार्किक प्रमाण नहीं है।

आयत 52 (सूरा अल-अंबिया, 21:52)

अनुवाद:
"जब उन्होंने अपने (मुँह भोले) बाप और अपनी क़ौम से कहा ये मूरतें जिनकी तुम लोग मुजाबिरी करते हो, आख़िर क्या (बला) है?"

Nyaya तत्व: Vyapti (Universal Proposition)
प्रतिज्ञा (Proposition):
इबराहीम ने मूरतों की पूजा के बारे में सवाल उठाया।

हेतु (Reason):
इबराहीम ने मूरतों की पूजा को व्यर्थ और समझ से बाहर माना। यह तर्क किसी सार्वभौमिक दृष्टिकोण से केवल एक विशेष सांस्कृतिक अभ्यास पर आधारित है, लेकिन इसका कोई वैज्ञानिक या तात्त्विक प्रमाण नहीं है।

उदाहरण (Example):
वैदिक दर्शन में मूर्तिपूजा का स्थान प्रतीकात्मक है, और आत्मा, ब्रह्म और संसार के ज्ञान के अनुरूप पूजा की जाती है। लेकिन, किसी चीज़ को पूजने के कारण को केवल निरर्थक बताना किसी तात्त्विक विवेक का परिणाम नहीं है।

उपना (Application):
यह आयत मूरतों की पूजा की आलोचना करती है, लेकिन इसे एक सांस्कृतिक विश्वास के रूप में समझने की जगह निरर्थक सिद्ध करने की कोशिश करती है।

निगमन (Conclusion):
यह आलोचना केवल विश्वास पर आधारित है, और इसमें तात्त्विक दृष्टिकोण का अभाव है।

आयत 53 (सूरा अल-अंबिया, 21:53)

अनुवाद:
"वह लोग बोले (और तो कुछ नहीं जानते मगर) अपने बड़े बूढ़ों को इनही की परसतिश करते देखा है।"

Nyaya तत्व: Hetu (Reason)

प्रतिज्ञा (Proposition):
लोगों ने मूरतों की पूजा केवल अपने पूर्वजों की परंपरा को देखते हुए की।

हेतु (Reason):
यह आयत बताती है कि लोग परंपरा के आधार पर पूजा करते हैं। यह बिना किसी तर्क या विवेक के एक सांस्कृतिक रिवाज पर आधारित है।

उदाहरण (Example):
वैदिक दर्शन में धार्मिक कृत्य और पूजा का आधार परम सत्य और आत्मज्ञान होता है, न कि केवल परंपरा। परंपराओं का पालन तात्त्विक दृष्टिकोण से उचित होना चाहिए, न कि केवल अंधानुकरण।

उपना (Application):
यह आयत दर्शाती है कि लोग अंधानुकरण करते हैं, लेकिन यह नहीं बताती कि यह क्यों गलत है या इसमें क्या त्रुटि है।

निगमन (Conclusion):
यह कथन परंपरा और अंधविश्वास पर आधारित है, और तात्त्विक आलोचना का अभाव है।

आयत 54 (सूरा अल-अंबिया, 21:54)

अनुवाद:
"इबराहीम ने कहा, 'यकीनन तुम भी और तुम्हारे बुज़ुर्ग भी खुली हुई गुमराही में पड़े हुए थे।'"

Nyaya तत्व: Hetu (Reason)

प्रतिज्ञा (Proposition):
इबराहीम ने कहा कि लोग और उनके बुज़ुर्ग गुमराही में थे।

हेतु (Reason):
यह आयत ईश्वर और तात्त्विक ज्ञान के आधार पर गुमराही का उल्लेख करती है, लेकिन यह नहीं बताती कि यह "गुमराही" किस तात्त्विक या तर्कसंगत कारण पर आधारित थी।

उदाहरण (Example):
वेदांत और अन्य दर्शन शास्त्रों में गुमराही की पहचान तात्त्विक अज्ञानता से होती है। लेकिन यहां यह केवल एक व्यक्तिगत दृष्टिकोण है।

उपना (Application):
यह आयत एक आलोचना प्रस्तुत करती है, लेकिन इसके भीतर कोई तर्कसंगत विवेचन या प्रमाण नहीं है।

निगमन (Conclusion):
यह कथन केवल आलोचना पर आधारित है और इसमें कोई तात्त्विक या अनुभवजन्य प्रमाण नहीं प्रस्तुत किया गया है।

आयत 55 (सूरा अल-अंबिया, 21:55)

अनुवाद:
"वह लोग कहने लगे, 'तो क्या तुम हमारे पास हक़ बात लेकर आए हो या तुम भी (यूँ ही) दिल्लगी करते हो?'"

Nyaya तत्व: Prameya (Object of Knowledge)
प्रतिज्ञा (Proposition):
लोग इबराहीम के तर्कों को सही नहीं मानते और इसे दिल्लगी समझते हैं।

हेतु (Reason):
यह आयत दर्शाती है कि लोग इबराहीम के तर्कों को नकारते हैं और उन्हें हास्य समझते हैं। यह केवल व्यक्तिगत विश्वास पर आधारित दृष्टिकोण है, और इसे सत्य या प्रमाणित तर्क के रूप में नहीं प्रस्तुत किया गया है।

उदाहरण (Example):
वैदिक दर्शन में ज्ञान को प्रमाण और तर्क के आधार पर माना जाता है, न कि केवल विश्वास या हंसी पर।

उपना (Application):
यह आयत दर्शाती है कि जब कोई सत्यवादी दृष्टिकोण सामने आता है, तो वह लोगों के पुराने विश्वासों से टकराता है, लेकिन इसमें कोई वैज्ञानिक या तर्कसंगत आधार नहीं प्रस्तुत किया जाता।

निगमन (Conclusion):
यह कथन एक आलोचना प्रस्तुत करता है, लेकिन इसके भीतर तात्त्विक समर्थन का अभाव है।

सारणी (आयतों का तार्किक मूल्यांकन)

आयत संख्या	चुना गया Nyaya तत्व	मुख्य आलोचना
51	Prameya (Object of Knowledge)	**"फ़हेम सलीम" का स्रोत या प्रमाण नहीं दिया गया।**
52	Vyapti (Universal Proposition)	**मूरतों की पूजा की आलोचना बिना तात्त्विक विवेचन के।**
53	Hetu (Reason)	**परंपरा पर आधारित पूजा का समर्थन किया गया।**
54	Hetu (Reason)	**गुमराही का आरोप बिना तात्त्विक विश्लेषण के।**
55	Prameya (Object of Knowledge)	**आलोचना केवल विश्वास पर आधारित, तर्कसंगत आधार नहीं।**

निष्कर्ष:

इन आयतों में व्यक्त विचारों में कोई ठोस तात्त्विक आधार नहीं है। आलोचनाएँ केवल विश्वासों और परंपराओं पर आधारित हैं, और इसमें किसी भी तर्क या प्रमाण का अभाव है। Nyaya दर्शन के अनुसार, ऐसे तर्कों को केवल विश्वास और अंधविश्वास के रूप में देखा जा सकता है, न कि सत्य के रूप में।

आयत का विश्लेषण (Nyaya Darshan के आधार पर)

आयत 56:

Pratijna (प्रस्तावना):
इबराहीम ने कहा कि उनके माबूद (बुत) नहीं, बल्कि आसमान और ज़मीन का मालिक परमेश्वर है, जिसने इन्हें उत्पन्न किया है और वह स्वयं इसका गवाह है।

Hetu (कारण):
यह दावा कि बुतों को तोड़ना उचित था, इस पर कोई तार्किक आधार नहीं है। इबराहीम का यह कथन परंपराओं और विश्वासों को आधार बनाता है, लेकिन कोई ठोस प्रमाण नहीं प्रस्तुत करता।

Udaharana (उदाहरण):
जब तक कोई विश्वास तर्क या प्रमाण से समर्थित नहीं होता, तब तक वह केवल व्यक्तिगत राय के रूप में ही माना जाएगा। उदाहरण स्वरूप, बुतों के खिलाफ उठाए गए कदम भी बिना किसी प्रमाण के हैं और केवल इबराहीम की व्यक्तिगत धारणा पर आधारित हैं।

Upanaya (लागू करना):
तर्क की दृष्टि से, कोई भी दावा सत्य होने के लिए प्रमाणित होना चाहिए, न कि केवल किसी के व्यक्तिगत अनुभव और भावनाओं पर आधारित।

Nigamana (निष्कर्ष):
यह कथन, बिना प्रमाण के, तर्कसंगत दृष्टि से स्वीकार्य नहीं है। एक सार्वभौमिक सत्य को स्वीकार करने के लिए प्रमाण की आवश्यकता होती है, न कि किसी एक व्यक्ति के व्यक्तिगत अनुभव को।

आयत 57:

Pratijna (प्रस्तावना):
इबराहीम ने तय किया कि वह बुतों के साथ एक चाल चलेंगे जब लोग उनके पीछे मुंह फेर लेंगे।

Hetu (कारण):
इबराहीम का यह क्रिया का निर्णय बिना किसी तात्त्विक या तर्कसंगत कारण के है। यह केवल उनकी योजना या रणनीति पर आधारित है, लेकिन इसका कोई ठोस आधार नहीं है कि यह क्यों किया जाना चाहिए था।

Udaharana (उदाहरण):
किसी भी कार्य को निष्पक्ष रूप से तर्कसंगत सिद्ध करने के लिए हमें उस कार्य के कारण, उद्देश्य और परिणाम पर विचार करना चाहिए। उदाहरण के लिए, इस प्रकार की रणनीतियाँ हमेशा प्रभावी नहीं होतीं, यदि उनके पीछे कोई ठोस तात्त्विक या प्रमाणित उद्देश्य नहीं हो।

Upanaya (लागू करना):
यह कदम केवल इबराहीम के व्यक्तिगत विश्वास पर आधारित है, जबकि किसी कार्य को सार्वभौमिक रूप से सही ठहराने के लिए तर्क और प्रमाण आवश्यक हैं।

Nigamana (निष्कर्ष):
यह कथन तर्क और प्रमाण के अभाव में न्यायिक दृष्टिकोण से कमजोर है।

आयत 58:

Pratijna (प्रस्तावना):
इबराहीम ने बुतों को तोड़ दिया, सिवाय बड़े बुत के, ताकि लोग बाद में उस ओर रुख करें।

Hetu (कारण):
इबराहीम की यह योजना बिना तात्त्विक आधार के है। यह केवल एक प्रकार की रणनीतिक चाल है, जो किसी दार्शनिक या नैतिक मूल्य के बजाय मानसिक और भावनात्मक उद्देश्य पर आधारित है।

Udaharana (उदाहरण):
किसी कार्य को निष्कलंक रूप से तर्कसंगत बनाने के लिए उसकी भूमिका और उद्देश्य को समझना आवश्यक है। उदाहरण के लिए, यदि कोई व्यक्ति एक बड़ी समस्या का समाधान खोजने के लिए छोटी समस्याओं को नजरअंदाज करता है, तो उसे आलोचना का सामना करना पड़ सकता है, क्योंकि इससे कोई स्पष्ट समाधान नहीं निकलता।

Upanaya (लागू करना):
यह कदम कोई सार्वभौमिक मूल्य या नैतिक शिक्षा प्रदान नहीं करता। यह सिर्फ एक रणनीति है जो भावनात्मक उद्देश्य को पूरा करने के लिए बनाई गई है।

Nigamana (निष्कर्ष):
यह कदम और विचार तर्कसंगत दृष्टिकोण से सही नहीं माना जा सकता, क्योंकि यह किसी तरह के सार्वभौमिक सत्य को नहीं प्रस्तुत करता।

आयत 59:

Pratijna (प्रस्तावना):
कुफ़्फ़ार कहते हैं कि इबराहीम ने बुतों का अपमान किया है और यह एक बड़ा अपराध है।

Hetu (कारण):
यह प्रतिक्रिया तर्क से अधिक भावनात्मक और पारंपरिक है। यदि यह एक तात्त्विक निर्णय होता, तो इसे प्रमाण और तर्क के आधार पर रखा जाता, लेकिन यह केवल नाराजगी और परंपरा से प्रेरित है।

Udaharana (उदाहरण):
जब कोई व्यक्ति अपनी पुरानी मान्यताओं को चुनौती देता है, तो अधिकतर लोग उसे नहीं स्वीकारते, लेकिन इसका यह मतलब नहीं है कि वह व्यक्ति गलत है। उदाहरण स्वरूप, विज्ञान में भी नए विचारों को चुनौती दी जाती है, लेकिन अंततः वही सच साबित होते हैं जो तर्कसंगत और प्रमाणित होते हैं।

Upanaya (लागू करना):
इसमें तर्क की कमी है, क्योंकि यह केवल एक परंपरागत और भावनात्मक प्रतिक्रिया है।

Nigamana (निष्कर्ष):
यह कथन तर्क और प्रमाण के अभाव में केवल भावनाओं पर आधारित है, और इसलिए इसे एक सार्वभौमिक सत्य के रूप में स्वीकार नहीं किया जा सकता।

आयत 60:

Pratijna (प्रस्तावना):
लोग कहते हैं कि एक नौजवान इबराहीम नामक व्यक्ति ने बुतों का अपमान किया था।

Hetu (कारण):
यह बयान केवल अफवाह और अज्ञानता पर आधारित है। इसमें किसी तर्कसंगत तथ्य या प्रमाण का अभाव है।

Udaharana (उदाहरण):
किसी व्यक्ति के बारे में अफवाह फैलाना और बिना प्रमाण के किसी बात को फैलाना आमतौर पर अनुचित माना जाता है। उदाहरण के तौर पर, समाज में अफवाहें फैलने पर वास्तविक साक्ष्य की आवश्यकता होती है ताकि सत्य को स्थापित किया जा सके।

Upanaya (लागू करना):
यह बयान केवल अनिश्चितता और संदिग्धता को बढ़ावा देता है, क्योंकि इसमें तर्क और प्रमाण का कोई ठोस आधार नहीं है।

Nigamana (निष्कर्ष):
यह कथन तर्कसंगत दृष्टिकोण से निराधार है, क्योंकि इसमें केवल अप्रत्यक्ष जानकारी और अनिश्चितता है।

निष्कर्ष (सारांश):
यह आयतों का समूह बिना तर्क, प्रमाण, और ठोस वैज्ञानिक आधार के विभिन्न दावों और प्रतिक्रियाओं पर आधारित है। Nyaya Darshan के अनुसार, कोई भी विचार या दावा तब तक सार्वभौमिक रूप से स्वीकार्य नहीं हो सकता जब तक कि उसमें प्रमाण और तर्कसंगत कारण न हो।

आयत का विश्लेषण (Nyaya Darshan के आधार पर)

आयत 61:

Pratijna (प्रस्तावना):
लोगों ने कहा कि इबराहीम को सबके सामने पकड़ कर लाया जाए ताकि लोग उसके कथन के गवाह बनें।

Hetu (कारण):
यह कार्रवाई बिना किसी तात्त्विक आधार के है। यह केवल किसी के कथन के आधार पर निर्णय लेने की स्थिति है, न कि किसी ठोस प्रमाण या तर्क पर।

Udaharana (उदाहरण):
किसी व्यक्ति के कथन को सार्वजनिक रूप से परीक्षण करने की प्रक्रिया तर्कसंगत हो सकती है, लेकिन तब जब इसके समर्थन में पर्याप्त साक्ष्य और प्रमाण हों। यहाँ केवल गवाह बनने का आह्वान किया जा रहा है, बिना यह बताए कि क्या आधार है।

Upanaya (लागू करना):
जब कोई कार्य या निर्णय बिना तात्त्विक प्रमाण के लिया जाता है, तो वह निष्पक्ष और न्यायसंगत नहीं हो सकता।

Nigamana (निष्कर्ष):
यह कदम तर्कसंगत दृष्टिकोण से अपर्याप्त है, क्योंकि इसमें केवल गवाही की मांग की जाती है, न कि तात्त्विक या प्रमाणित आधार।

आयत 62:

Pratijna (प्रस्तावना):
लोगों ने इबराहीम से पूछा कि क्या तुमने इन बुतों के साथ ऐसा किया है।

Hetu (कारण):
यह सवाल लोगों की संदेहपूर्ण प्रतिक्रिया है, जो सीधे तौर पर इबराहीम के कार्यों को मान्यता नहीं देते। यह संदेह किसी वैज्ञानिक या तर्कसंगत विचार पर आधारित नहीं है।

Udaharana (उदाहरण):
किसी भी व्यक्ति से किए गए कार्य के बारे में सवाल करना एक सामान्य प्रक्रिया हो सकती है, लेकिन यह सवाल सही तभी होता है जब हम तात्त्विक और तार्किक रूप से उन कार्यों की जांच कर रहे हों।

Upanaya (लागू करना):
यह सवाल संदेह के बजाय किसी निष्कलंक परीक्षण या जांच पर आधारित होना चाहिए था, ताकि वह सही तरीके से जवाब दे सके।

Nigamana (निष्कर्ष):
यह सवाल सटीक और तर्कसंगत रूप से पूछा नहीं गया, बल्कि यह केवल एक संदेहात्मक प्रतिक्रिया है, जो इस स्थिति में पूरी तरह से तर्कसंगत नहीं है।

आयत 63:

Pratijna (प्रस्तावना):
इबराहीम ने कहा कि यह कार्य इन बुतों के बड़े (खुदा) ने किया है। अगर ये बुत बोल सकते हैं, तो उनसे पूछो।

Hetu (कारण):
इबराहीम का यह उत्तर तर्कसंगत दृष्टिकोण से एक उत्तेजक उत्तर है, जो विरोधियों को चुनौती देता है, लेकिन यह भी किसी ठोस प्रमाण या तात्त्विक आधार पर आधारित नहीं है।

Udaharana (उदाहरण):
किसी सवाल का जवाब देने के लिए हमें हमेशा तात्त्विक प्रमाण की आवश्यकता होती है। जब कोई किसी सवाल का उत्तर अप्रमाणिक तरीके से देता है, तो यह केवल संवाद की निरर्थकता को दर्शाता है।

Upanaya (लागू करना):
इबराहीम का यह जवाब व्यक्तिगत विश्वास पर आधारित है, न कि किसी सार्वभौमिक तर्क पर।

Nigamana (निष्कर्ष):
यह कथन तर्कसंगत दृष्टिकोण से अप्रभावी है, क्योंकि इसमें कोई प्रमाण नहीं दिया गया है और यह केवल चैलेंज के रूप में प्रस्तुत किया गया है।

आयत 64:

Pratijna (प्रस्तावना):
लोगों ने अपने दिल में सोचा कि इबराहीम ने जो कहा, वह गलत था, और वह स्वयं ही नाहक़ थे।

Hetu (कारण):
यह विचार एक तात्त्विक या न्यायिक परीक्षा के बिना किया गया निष्कर्ष है। यह केवल भावनाओं पर आधारित है, न कि तर्कसंगत विश्लेषण पर।

Udaharana (उदाहरण):
कभी-कभी हम बिना तथ्यों के किसी व्यक्ति के विचारों का मूल्यांकन करते हैं, लेकिन इसका कोई भी नतीजा बिना तात्त्विक सोच और प्रमाण के निष्कर्ष पर नहीं पहुँच सकता।

Upanaya (लागू करना):
जब कोई राय बिना प्रमाण के दी जाती है, तो उसे विश्वसनीय या न्यायसंगत नहीं माना जा सकता। यह केवल संदेह का परिणाम है।

Nigamana (निष्कर्ष):
यह विचार बिना तात्त्विक जांच के है और इसलिए यह निष्कर्ष कमजोर और अप्रासंगिक है।

आयत 65:

Pratijna (प्रस्तावना):
लोगों ने स्वीकार किया कि ये बुत बोल नहीं सकते और इबराहीम के कथन में सच्चाई है।

Hetu (कारण):
यह कथन अब तात्त्विक रूप से सही हो सकता है, क्योंकि लोग स्वयं यह समझते हैं कि बुतों से कोई प्रतिक्रिया नहीं आ सकती। यह स्वीकृति तर्क और प्रमाण पर आधारित है।

Udaharana (उदाहरण):
जब किसी बात का परीक्षण किया जाता है और सही पाए जाने पर उस पर विश्वास किया जाता है, तो यह उदाहरण साबित करता है कि तर्क और परीक्षण के बिना किसी बात पर विश्वास नहीं किया जा सकता।

Upanaya (लागू करना):
यह घटनाक्रम इस बात की पुष्टि करता है कि तर्क और साक्ष्य की आवश्यकता होती है ताकि हम किसी विचार को सच्चा मान सकें।

Nigamana (निष्कर्ष):
यह कथन अब तर्कसंगत और सही प्रतीत होता है, क्योंकि यह बुतों के बारे में समझने पर आधारित है और इस पर वैज्ञानिक दृष्टिकोण से कोई सवाल नहीं है।

निष्कर्ष (सारांश):
यह आयतें तर्क और प्रमाण पर आधारित संवाद और प्रतिक्रियाओं को दर्शाती हैं। पहला तर्कसंगत सवाल पूछा गया, लेकिन जवाब एक चुनौतीपूर्ण और अप्रमाणिक था। अंततः, विचारों को प्रमाणित किया गया, लेकिन तब भी निर्णय बिना तात्त्विक आधार के किया गया। Nyaya Darshan के अनुसार, कोई भी विचार तब तक स्वीकार नहीं किया जा सकता जब तक कि वह प्रमाण और तर्क पर आधारित न हो।

आयत का विश्लेषण (Nyaya Darshan के आधार पर)

आयत 66:

Pratijna (प्रस्तावना):
इबराहीम ने सवाल किया कि क्या तुम लोग ख़ुदा को छोड़कर उन चीजों की पूजा करते हो जो न तो तुम्हारे लिए कोई लाभकारी हैं और न ही तुम्हारा कोई नुकसान कर सकती हैं?

Hetu (कारण):
यह सवाल बहुत ही तात्त्विक और तार्किक है, क्योंकि यह उन चीजों की पूजा पर सवाल उठाता है, जिनमें न तो कोई तत्वदृष्टि है और न ही वे किसी वास्तविक शक्ति को दर्शाती हैं।

Udaharana (उदाहरण):
हमारे रोजमर्रा के जीवन में भी हम किसी वस्तु या व्यक्ति की पूजा या मान्यता तब करते हैं जब हम उसकी वास्तविक शक्ति या लाभ को समझते हैं। बिना किसी ठोस प्रमाण और उपयोगिता के किसी वस्तु की पूजा तर्कसंगत नहीं है।

Upanaya (लागू करना):
जब कोई वस्तु या शक्ति प्रमाणित नहीं होती, तो उसे पूजा के योग्य नहीं माना जा सकता। यह तर्क बहुत स्पष्ट है कि पूजा का उद्देश्य कोई वास्तविक लाभ प्राप्त करना होना चाहिए।

Nigamana (निष्कर्ष):
यह आयत स्पष्ट रूप से यह दर्शाती है कि पूजा और श्रद्धा केवल उन चीजों के लिए होनी चाहिए जो प्रमाणित और लाभकारी हों, न कि उन चीजों के लिए जो निष्क्रिय और बेकार हों।

आयत 67:

Pratijna (प्रस्तावना):
इबराहीम ने उन लोगों को लानत भेजी और उनसे पूछा कि क्या वे ख़ुदा को छोड़कर अपनी पूजा करने की वजह से समझ नहीं पा रहे हैं।

Hetu (कारण):
यह प्रश्न उन लोगों की मानसिकता पर तात्त्विक रूप से वार करता है। यदि व्यक्ति अपनी पूजा में तर्क और प्रमाण की अनदेखी करता है, तो वह अज्ञानता के गर्त में गिरा हुआ है।

Udaharana (उदाहरण):
व्यक्तिगत रूप से हम किसी वस्तु की पूजा या आदर तब करते हैं जब हम उसकी शक्ति और उपयोगिता को समझते हैं। बिना समझ के किसी चीज़ को मान्यता देना निरर्थक है।

Upanaya (लागू करना):
यह आयत लोगों को यह समझाने का प्रयास करती है कि पूजा और श्रद्धा में तर्क और समझ होना चाहिए।

Nigamana (निष्कर्ष):
यह आयत तर्कसंगत और प्रमाणित पूजा की आवश्यकता को दर्शाती है, जो केवल अव्यक्त और अज्ञेय वस्तुओं की पूजा से ऊपर हो।

आयत 68:

Pratijna (प्रस्तावना):
लोगों ने इबराहीम से कहा कि यदि तुम अपने दावे में सच हो तो तुम्हें आग में जलाकर दिखाओ।

Hetu (कारण):
यह प्रतिक्रिया उन लोगों के अविश्वास को दिखाती है, जो इबराहीम के धार्मिक विश्वास और उनके तर्क पर शक कर रहे थे। यह एक प्रकार से चैलेंज है, लेकिन इसे प्रमाणित करने का कोई तात्त्विक आधार नहीं है।

Udaharana (उदाहरण):
कभी-कभी हमें किसी को चुनौती देने के लिए किसी भी तर्क का आधार नहीं होता, हम केवल अपने विश्वासों और धारणाओं पर जोर देते हैं, जो तात्त्विक रूप से सही नहीं होते।

Upanaya (लागू करना):
यह चुनौती पूरी तरह से अविश्वास पर आधारित है और किसी ठोस प्रमाण या तर्क पर नहीं खड़ी है।

Nigamana (निष्कर्ष):
यह प्रतिक्रिया तर्कसंगत नहीं है, क्योंकि यह केवल चुनौती देने पर आधारित है, न कि किसी प्रमाण या तात्त्विक जांच पर।

आयत 69:

Pratijna (प्रस्तावना):
लोगों ने इबराहीम को आग में डाल दिया, लेकिन फिर भी इबराहीम को कोई हानि नहीं हुई।

Hetu (कारण):
यह घटना ख़ुदा की शक्ति और उसकी न्यायिक प्रक्रिया को दर्शाती है। यहाँ से यह सिद्ध होता है कि ख़ुदा के आदेश के बिना कोई भी घटना संभव नहीं हो सकती।

Udaharana (उदाहरण):
जब किसी व्यक्ति को किसी संकट का सामना करना पड़ता है और वह संकट केवल एक उच्च शक्ति के नियंत्रण में होता है, तब उसका बचना या शांति से रहना तात्त्विक रूप से उस शक्ति की सिद्धि को दर्शाता है।

Upanaya (लागू करना):
यह आयत ख़ुदा की अनंत शक्ति और न्याय की पुष्टि करती है कि कोई भी शक्ति उसकी अनुमति के बिना किसी को हानि नहीं पहुँचा सकती।

Nigamana (निष्कर्ष):
यह आयत ख़ुदा की शक्ति और न्याय को प्रमाणित करती है, और यह तात्त्विक रूप से सही है कि किसी भी घटना का घटित होना केवल ख़ुदा की अनुमति से ही संभव है।

आयत 70:

Pratijna (प्रस्तावना):
लोगों ने इबराहीम को नुकसान पहुँचाने के लिए चालबाज़ी की, लेकिन उनका प्रयास विफल हो गया।

Hetu (कारण):
यह आयत ख़ुदा की सर्वोच्च शक्ति को दिखाती है, जो हर प्रकार के षड्यंत्र को विफल कर देती है।

Udaharana (उदाहरण):
कभी-कभी हमारे जीवन में लोग किसी अन्य व्यक्ति के लिए बुरा सोचते हैं, लेकिन वह व्यक्ति ख़ुदा की कृपा से सुरक्षित रहता है, क्योंकि कोई भी योजना या षड्यंत्र ख़ुदा की अनुमति के बिना सफल नहीं हो सकता।

Upanaya (लागू करना):
यह आयत यह साबित करती है कि ख़ुदा के साथ कोई भी शक्ति या षड्यंत्र सफल नहीं हो सकता।

Nigamana (निष्कर्ष):
यह आयत तात्त्विक रूप से यह सिद्ध करती है कि ख़ुदा की अनुमति के बिना कोई भी शक्ति या योजना सफल नहीं हो सकती।

निष्कर्ष (सारांश):

यह आयतें तात्त्विक दृष्टिकोण से ख़ुदा की अनंत शक्ति, न्याय और अविश्वासियों के मानसिकता पर चोट करती हैं। यहाँ पर इबराहीम द्वारा पूछे गए सवालों में तर्क, प्रमाण और किसी चीज़ की पूजा के वास्तविक उद्देश्य की आवश्यकता को उजागर किया गया है। हर घटना ख़ुदा के नियंत्रण में होती है, और किसी भी योजना या षड्यंत्र को ख़ुदा की अनुमति के बिना सफल नहीं होने दिया जाता।

आयत 71-75 (**सूरए अंबिया**, 21:71-75)

आयत 71 (सूरए अंबिया, 21:71)

अनुवाद: "और हम ने ही इबराहीम और लूत को (सरकशों से) सही व सालिम निकालकर इस सर ज़मीन (शाम बैतुलमुक़द्दस) में जा पहुँचाया जिसमें हमने सारे जहाँन के लिए तरह-तरह की बरकत अता की थी।"

आधारित तत्व (Nyaya Element): Hetu (Reason)
विश्लेषण:
यह आयत इस बात को स्थापित करती है कि इबराहीम और लूत को उन लोगों से बचाया गया जिन्होंने उनका विरोध किया। Nyaya दर्शन के "Hetu" (Reason) के अनुसार, किसी घटना या निर्णय का कारण स्पष्ट रूप से दिया जाना चाहिए। यहाँ पर "बरकत" का दावा किया गया है, लेकिन इसका कोई ठोस तात्त्विक या प्रमाणित कारण नहीं दिया गया है। "बरकत" एक अमूर्त विचार है और इसका कोई भौतिक प्रमाण या वैज्ञानिक आधार नहीं है।

निष्कर्ष:
यह आयत Nyaya दर्शन के "Hetu" के सिद्धांत से मेल नहीं खाती, क्योंकि इसमें दिए गए कारण (बरकत) का कोई प्रमाणित आधार नहीं है। यह धार्मिक विश्वास पर आधारित है और तात्त्विक दृष्टि से अप्रमाणित है।

आयत 72 (सूरए अंबिया, 21:72)

अनुवाद: "और हमने इबराहीम को इनाम में इसहाक़ (जैसा बेटा) और याकूब (जैसा पोता) इनायत फरमाया, हमने सबको नेक बख़्त बनाया।"

आधारित तत्व (Nyaya Element): Pramana (Valid Knowledge)
विश्लेषण:
इस आयत में इबराहीम को दो बेटों का इनाम दिया गया। Nyaya दर्शन में, "Pramana" (सत्य ज्ञान) की आवश्यकता होती है। यह दावा किया गया है कि इबराहीम को इन बेटों का इनाम दिया गया, लेकिन इसमें इसका कोई प्रमाणित स्रोत या तात्त्विक आधार नहीं प्रस्तुत किया गया। यह दावा धार्मिक विश्वास और आस्था पर आधारित है, लेकिन कोई वैज्ञानिक प्रमाण नहीं है।

निष्कर्ष:
यह आयत Nyaya दर्शन के "Pramana" के सिद्धांत से मेल नहीं खाती, क्योंकि इसमें कोई प्रमाणित या सत्य ज्ञान नहीं दिया गया है। यह केवल विश्वास पर आधारित है।

आयत 73 (सूरए अंबिया, 21:73)

अनुवाद: "और उन सबको (लोगों का) पेशवा बनाया कि हमारे हुक्म से (उनकी) हिदायत करते थे और हमने उनके पास नेक काम करने और नमाज़ पढ़ने और ज़कात देने की 'वही' भेजी थी और ये सब के सब हमारी ही इबादत करते थे।"

आधारित तत्व (Nyaya Element): Vyapti (Invariable Concomitance)
विश्लेषण:
यह आयत यह कहती है कि इबराहीम और उनके परिवार को "हिदायत" दी गई और वे सब एक जैसा कार्य करते थे। Nyaya दर्शन के "Vyapti" (अनिवार्य संबंध) के सिद्धांत के अनुसार, हर घटना का एक निश्चित और अनिवार्य परिणाम होना चाहिए। यहां पर, यह दावा किया गया है कि ये सभी लोग एक ही प्रकार के कार्य (हिदायत, नमाज़, ज़कात) करते थे, लेकिन यह सिद्धांत तात्त्विक रूप से गलत हो सकता है, क्योंकि प्रत्येक व्यक्ति का कार्य उसके स्वयं के अनुभव और स्वतंत्र विचारों पर आधारित होता है। सबको एक ही तरह के कार्य करने के लिए बाध्य करना, व्यक्तिगत स्वतंत्रता का उल्लंघन है और यह "Vyapti" के सिद्धांत से मेल नहीं खाता।

निष्कर्ष:
यह आयत Nyaya दर्शन के "Vyapti" के सिद्धांत से मेल नहीं खाती, क्योंकि यह अनिवार्य रूप से यह मानती है कि सभी को एक ही तरह के कार्य करने के लिए बाध्य किया जाएगा, जो व्यक्तिगत स्वतंत्रता के खिलाफ है।

आयत 74 (सूरए अंबिया, 21:74)

अनुवाद: "और लूत को भी हम ही ने फ़हमे सलीम और नबूवत अता की और हम ही ने उस बस्ती से जहाँ के लोग बदकारियाँ करते थे नजात दी, इसमें शक नहीं कि वह लोग बड़े बदकार आदमी थे।"

आधारित तत्व (Nyaya Element): Hetu (Reason)
विश्लेषण:
यह आयत लूत को "फ़हमे सलीम" और "नबूवत" देने का दावा करती है, साथ ही उन लोगों को नजात देने की बात कहती है जो बुराई करते थे। Nyaya दर्शन में, "Hetu" के सिद्धांत के अनुसार, किसी दंड या पुरस्कार का कारण होना चाहिए, लेकिन यहां पर यह स्पष्ट नहीं किया गया कि लूत को क्यों इन विशेषताओं का वरदान दिया गया। इसका कोई स्पष्ट तात्त्विक या प्रमाणित कारण नहीं है। इसके अलावा, बुराई करने वालों को नजात देने का कोई वैज्ञानिक या तात्त्विक आधार नहीं है।

निष्कर्ष:
यह आयत Nyaya दर्शन के ”Hetu” के सिद्धांत से मेल नहीं खाती, क्योंकि इसमें दंड या पुरस्कार का कोई तात्त्विक कारण नहीं दिया गया है।

आयत 75 (सूरए अंबिया, 21:75)

अनुवाद: ”और हमने लूत को अपनी रहमत में दाखिल कर लिया, इसमें शक नहीं कि वह नेकोंकार बन्दों में से थे।”

आधारित तत्व (Nyaya Element): **Pramāṇa (Valid Knowledge)**
विश्लेषण:
यह आयत यह कहती है कि लूत को अल्लाह की रहमत दी गई, क्योंकि वे ”नेकोंकार” थे। Nyaya दर्शन के ”Pramana” सिद्धांत के अनुसार, किसी भी घटना या व्यक्ति के विशेषण का आधार स्पष्ट प्रमाण होना चाहिए। लूत के नेकोंकारी होने का दावा किया गया है, लेकिन इसका कोई तात्त्विक प्रमाण नहीं है। यह धार्मिक विश्वास पर आधारित है, और Nyaya दर्शन में ऐसा प्रमाणित ज्ञान आवश्यक होता है।

निष्कर्ष:
यह आयत Nyaya दर्शन के ”Pramana” के सिद्धांत से मेल नहीं खाती, क्योंकि इसमें कोई प्रमाणित सत्य ज्ञान नहीं दिया गया है। यह केवल धार्मिक विश्वास पर आधारित है।

सारणी (आयतों का तार्किक मूल्यांकन):

आयत संख्या	चुना गया तत्व	मुख्य आलोचना
71	Hetu	”बरकत” का कोई तात्त्विक प्रमाण नहीं है।
72	Pramana	”इनाम” का कोई प्रमाणित आधार नहीं है।
73	Vyapti	व्यक्तियों के कार्यों में अनिवार्य समानता का कोई तात्त्विक आधार नहीं है।

74	Hetu	**लूत को "नबूवत" और "फ़हमे सलीम" देने का कोई स्पष्ट कारण नहीं है।**
75	Pramana	**लूत के "नेकोंकार" होने का कोई प्रमाणित आधार नहीं है।**

सारांश:
इन आयतों में दिए गए विचार और घटनाएँ Nyaya दर्शन के सिद्धांतों से मेल नहीं खातीं, क्योंकि इनमें कोई प्रमाणित या तात्त्विक आधार नहीं दिया गया है। ये आयतें धार्मिक विश्वास और आस्था पर आधारित हैं, लेकिन तर्कसंगत और वैज्ञानिक दृष्टिकोण से अप्रमाणित हैं।

Here is the structured analysis of the given verses from the Quran based on Nyaya Darshan elements:

आयत 76

आयत का अनुवाद:
"और (ऐ रसूल लूत से भी) पहले (हमने) नूह को नबूवत पर फ़ायज़ किया जब उन्होंने (हमको) आवाज़ दी तो हमने उनकी (दुआ) सुन ली फिर उनको और उनके साथियों को (तूफ़ान की) बड़ी सख़्त मुसीबत से नजात दी।"

चुना गया न्याय तत्व:
प्रमाण (Pramana)
विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): नूह की दुआ को सुना गया और उन्हें और उनके साथियों को तूफ़ान से नजात दी गई।**
- **हेतु (Reason): यह आयत दावा करती है कि ईश्वर ने नूह की दुआ सुनी और उन्हें और उनके साथियों को नजात दी, लेकिन यह केवल विश्वास पर आधारित कथन है और इसका कोई ऐतिहासिक या भौगोलिक प्रमाण नहीं है।**
- **उदाहरण (Example): भारतीय दर्शन में "कर्म" के सिद्धांत के अनुसार, जीवन के परिणाम कर्मों के आधार पर होते हैं, न कि केवल दुआओं पर निर्भर।**
- **निगमन (Conclusion): यह आयत प्रमाण के सिद्धांत का उल्लंघन करती है, क्योंकि यह दुआ के प्रभाव को भौतिक साक्ष्य के बिना प्रस्तुत करती है।**

आयत 77

आयत का अनुवाद:
"और जिन लोगों ने हमारी आयतों को झुठलाया था उनके मुक़ाबले में उनकी मदद की बेशक ये लोग (भी) बहुत बुऱे लोग थे तो हमने उन सबको डुबा मारा।"

चुना गया न्याय तत्व:
व्याप्ति (Vyapti)
विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): जिन्होंने ईश्वर की आयतों को झुठलाया, उन्हें डुबा दिया गया।**
- **हेतु (Reason): यह आयत दावा करती है कि झूठे विश्वासियों को सजा देने के रूप में सभी को डुबा दिया गया, लेकिन यह व्यापक रूप से सही नहीं है क्योंकि कई ऐसे लोग हैं जिन्होंने किसी भी धार्मिक कथन को झुठलाया है, लेकिन उन्होंने इससे सजा नहीं पाई।**
- **उदाहरण (Example): भारतीय समाज में भी कई लोग विभिन्न धार्मिक अवधारणाओं को नकारते हैं, लेकिन उन्हें इसके लिए सजा नहीं दी जाती।**
- **निगमन (Conclusion): यह आयत व्याप्ति के सिद्धांत का उल्लंघन करती है, क्योंकि यह एक सामान्य नियम के रूप में लागू नहीं हो सकती।**

आयत 78

आयत का अनुवाद:
"और (ऐ रसूल इनको) दाऊद और सुलेमान का (वाक़्या याद दिलाओ) जब ये दोनों एक खेती के बारे में जिसमें रात के वक़्त कुछ लोगों की बकरियाँ (घुसकर) चर गई थी फैसला करने बैठे और हम उन लोगों के क़िस्से को देख रहे थे (कि बाहम इक़तेलाफ़ हुआ)।"

चुना गया न्याय तत्व:
प्रमेय (Prameya)
विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): दाऊद और सुलेमान ने एक मामले में फैसला किया, जिसमें बकरियों का झगड़ा था।**

- **हेतु (Reason):** यह कथन केवल एक किस्सा है, लेकिन इसका कोई वैज्ञानिक या तात्त्विक आधार नहीं है। यदि यह एक उदाहरण के रूप में प्रस्तुत किया गया है तो यह केवल धार्मिक विश्वास पर निर्भर है।
- **उदाहरण (Example):** भारतीय न्याय में "धर्म" के सिद्धांत के आधार पर विवादों का समाधान किया जाता है, लेकिन यह तर्क और प्रमाण पर आधारित होता है।
- **निगमन (Conclusion):** यह आयत प्रमेय के सिद्धांत का उल्लंघन करती है क्योंकि यह केवल एक किस्से के आधार पर न्याय का उदाहरण देती है।

आयत 79

आयत का अनुवाद:
"तो हमने सुलेमान को (इसका सही फ़ैसला समझा दिया) और (यूँ तो) सबको हम ही ने फहमे सलीम और इल्म अता किया और हम ही ने पहाड़ों को दाऊद का ताबेए कर दिया था था कि उनके साथ (ख़ुदा की) तस्बीह किया करते थे और परिन्दों को (भी ताबेए कर दिया था) और हम ही (ये अजाऐब) किया करते थे।"

चुना गया न्याय तत्व:
प्रमाण (Pramana)
विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):** ईश्वर ने सुलेमान को सही फैसले का ज्ञान दिया और दाऊद को पहाड़ों और पक्षियों का नियंत्रण प्रदान किया।
- **हेतु (Reason):** यह दावा बिना किसी वैज्ञानिक या प्रमाणिक आधार के किया गया है। यह धार्मिक विश्वास पर आधारित है और इसे सार्वभौमिक या तात्त्विक दृष्टिकोण से सिद्ध नहीं किया जा सकता।
- **उदाहरण (Example):** भारतीय दर्शन में "योग" और "साधना" के माध्यम से ज्ञान प्राप्त करने का महत्व बताया गया है, लेकिन यह व्यक्तिगत अभ्यास पर आधारित है, न कि बाहरी बलों द्वारा ज्ञान देने के।
- **निगमन (Conclusion):** यह आयत प्रमाण के सिद्धांत का उल्लंघन करती है, क्योंकि यह बिना साक्ष्य के किसी व्यक्ति को विशेष ज्ञान देने का दावा करती है।

आयत 80

आयत का अनुवाद:
"और हम ही ने उनको तुम्हारी जंगी पोशिश (ज़िराह) का बनाना सिखा दिया ताकि तुम्हें (एक दूसरे के) वार से बचाए तो क्या तुम (अब भी) उसके शुक्रगुज़ार न बनोगे।"

चुना गया न्याय तत्व:
हेतु (Reason)
विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): ईश्वर ने दाऊद को युद्ध के लिए कवच बनाने का ज्ञान दिया।**
- **हेतु (Reason): यह दावा बिना प्रमाण और तर्क के प्रस्तुत किया गया है। युद्ध के लिए कवच बनाना मानवता के विकास का एक हिस्सा है, जो विज्ञान और तकनीकी ज्ञान पर आधारित है, न कि किसी धार्मिक दावे पर।**
- **उदाहरण (Example): भारतीय युद्धनीति में "शास्त्र" और "तंत्र" का ज्ञान युद्ध के दौरान सुरक्षा के लिए उपयोग किया जाता है, जो तात्त्विक और व्यावहारिक दृष्टिकोण से सिद्ध है।**
- **निगमन (Conclusion): यह आयत तर्क और प्रमाण के बिना किसी विशेष व्यक्ति को ज्ञान देने का दावा करती है, जो न्याय दर्शन के सिद्धांतों के खिलाफ है।**

सारणी (आयतों का तार्किक मूल्यांकन)

आयत संख्या	चुना गया तत्व	मुख्य आलोचना
76	**प्रमाण (Pramana)**	**बिना प्रमाण के दुआ का प्रभाव प्रस्तुत किया गया।**
77	**व्याप्ति (Vyapti)**	**सभी को डुबाने का दावा सामान्य नहीं है।**
78	**प्रमेय (Prameya)**	**केवल किस्से के आधार पर न्याय का उदाहरण दिया गया।**
79	**प्रमाण (Pramana)**	**बिना प्रमाण के विशेष ज्ञान देने का दावा।**
80	**हेतु (Reason)**	**युद्ध के लिए कवच बनाने का ज्ञान तर्क और विज्ञान पर आधारित नहीं है।**

समग्र निष्कर्ष:

इन आयतों में कई धार्मिक दावे किए गए हैं, जो तात्त्विक और तर्कसंगत दृष्टिकोण से कमजोर प्रतीत होते हैं। इन दावों में प्रमाण, तर्क, और व्यावहारिक आधार की कमी है, जो न्याय दर्शन के सिद्धांतों के खिलाफ हैं।

Here is the structured analysis of the given verses from the Quran based on Nyaya Darshan elements:

आयत 81

आयत का अनुवाद:

"और (हम ही ने) बड़े ज़ोरों की हवा को सुलेमान का (ताबेए कर दिया था) कि वह उनके हुक्म से इस सरज़मीन (बैतुलमुक़द्दस) की तरफ चला करती थी जिसमें हमने तरह-तरह की बरकतें अता की थी और हम तो हर चीज़ से ख़ूब वाक़िफ़ थे (और) है।"

चुना गया न्याय तत्व:

प्रमाण (Pramana)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): ईश्वर ने हवा को सुलेमान के नियंत्रण में कर दिया था ताकि वह उसे अपने आदेश से चलवा सकें।**
- **हेतु (Reason): यह आयत बिना वैज्ञानिक या तात्त्विक प्रमाण के दावा करती है कि हवा को सुलेमान के आदेश पर चलाया गया। ऐसा दावा केवल विश्वास पर आधारित है, जो वास्तविकता से मेल नहीं खाता।**
- **उदाहरण (Example): भारतीय विज्ञान में वायुमंडलीय परिस्थितियाँ और हवा के दिशा परिवर्तन को भौतिक सिद्धांतों द्वारा समझा जाता है, न कि किसी व्यक्ति के आदेश से।**
- **निगमन (Conclusion): यह आयत प्रमाण के सिद्धांत का उल्लंघन करती है, क्योंकि इसमें भौतिक और वैज्ञानिक साक्ष्य की कमी है।**

आयत 82

आयत का अनुवाद:
"और जिन्नात में से जो लोग (समन्दर में) ग़ोता लगाकर (जवाहरात निकालने वाले) थे और उसके अलावा और काम भी करते थे (सुलेमान का ताबेए कर दिया था) और हम ही उनके निगेहबान थे।"

चुना गया न्याय तत्व:
प्रमाण (Pramana)
विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): जिन्नात को सुलेमान के आदेश पर समुद्र में गोताखोरी और अन्य काम करने के लिए नियोजित किया गया।**
- **हेतु (Reason): यह आयत दावा करती है कि जिन्नात को मानवों के आदेश पर काम करने के लिए नियोजित किया गया था, लेकिन यह बिना किसी प्रमाण के किया गया दावा है।**
- **उदाहरण (Example): भारतीय दर्शन में अदृश्य और असाधारण शक्तियों के बारे में व्याख्या की जाती है, लेकिन इन शक्तियों का कोई ठोस प्रमाण नहीं होता।**
- **निगमन (Conclusion): यह आयत प्रमाण के सिद्धांत का उल्लंघन करती है क्योंकि यह अदृश्य प्राणियों को नियंत्रित करने के विषय में दावा करती है, जिसका कोई भौतिक या वैज्ञानिक प्रमाण नहीं है।**

आयत 83

आयत का अनुवाद:
"(कि भाग न जाएँ) और (ऐ रसूल) अय्यूब (का क़िस्सा याद करो) जब उन्होंने अपने परवरदिगार से दुआ की कि (ख़ुदा वन्द) बीमारी तो मेरे पीछे लग गई है और तू तो सब रहम करने वालो से (बढ़ कर है मुझ पर तरस खा)।"

चुना गया न्याय तत्व:
प्रमाण (Pramana)
विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): अय्यूब ने बीमारी से मुक्ति के लिए दुआ की और ईश्वर ने उनकी दुआ सुन ली।**
- **हेतु (Reason): यह आयत केवल एक धार्मिक विश्वास प्रस्तुत करती है, लेकिन इसके समर्थन में कोई वैज्ञानिक प्रमाण या अनुभवजन्य साक्ष्य नहीं है।**

- **उदाहरण (Example):** भारतीय आयुर्वेद और चिकित्सा में रोगों का उपचार विज्ञान और उपचार के आधार पर किया जाता है, न कि केवल दुआओं से।
- **निगमन (Conclusion):** यह आयत प्रमाण के सिद्धांत का उल्लंघन करती है क्योंकि यह बिना किसी तात्त्विक आधार के दुआ के प्रभाव को प्रस्तुत करती है।

आयत 84

आयत का अनुवाद:
"तो हमने उनकी दुआ कुबूल की तो हमने उनका जो कुछ दर्द दुख था रफ़ा कर दिया और उन्हें उनके लड़के बाले बल्कि उनके साथ उतनी ही और भी महज़ अपनी ख़ास मेहरबानी से और इबादत करने वालों की इबरत के वास्ते अता किए।"

चुना गया न्याय तत्व:
प्रमाण (Pramana)
विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):** ईश्वर ने अय्यूब की दुआ का जवाब दिया और उनके दर्द को दूर कर दिया।
- **हेतु (Reason):** यह आयत केवल विश्वास पर आधारित है और इसका कोई भौतिक या चिकित्सीय आधार नहीं है। ऐसी दुआओं का प्रभाव वास्तविकता से मेल नहीं खाता।
- **उदाहरण (Example):** भारतीय चिकित्सा पद्धतियों में रोगों का उपचार तात्त्विक सिद्धांत और उपचारों पर आधारित है, न कि केवल दुआओं पर।
- **निगमन (Conclusion):** यह आयत प्रमाण के सिद्धांत का उल्लंघन करती है, क्योंकि इसमें तात्त्विक या वैज्ञानिक आधार का अभाव है।

आयत 85

आयत का अनुवाद:
"और (ऐ रसूल) इसमाईल और इदरीस और ज़ुलकिफ़ली (के वाक़यात से याद करो) ये सब साबिर बन्दे थे।"

चुना गया न्याय तत्व:
प्रमाण (Pramana)
विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): इसमाईल, इदरीस, और जुल्किफिल जैसे पैगंबरों को साहस और धैर्य का प्रतीक बताया गया है।**
- **हेतु (Reason): यह कथन केवल धार्मिक विश्वास पर आधारित है, लेकिन इसके किसी ऐतिहासिक प्रमाण का अभाव है। यह विश्वास कोई सार्वभौमिक सत्य नहीं है।**
- **उदाहरण (Example): भारतीय दार्शनिक विचारधाराओं में भी महान व्यक्तियों का आदर्श प्रस्तुत किया जाता है, लेकिन उनका महत्व सामाजिक और तात्त्विक दृष्टिकोण से होता है, न कि केवल धार्मिक दृष्टिकोण से।**
- **निगमन (Conclusion): यह आयत प्रमाण के सिद्धांत का उल्लंघन करती है क्योंकि यह किसी धार्मिक कथा या विश्वास को बिना प्रमाण के प्रस्तुत करती है।**

सारणी (आयतों का तार्किक मूल्यांकन)

आयत संख्या	चुना गया तत्व	मुख्य आलोचना
81	**प्रमाण (Pramana)**	**हवा के नियंत्रण का दावा बिना प्रमाण के किया गया।**
82	**प्रमाण (Pramana)**	**जिन्नात के नियंत्रण का दावा बिना प्रमाण के है।**
83	**प्रमाण (Pramana)**	**दुआ का प्रभाव बिना प्रमाण के प्रस्तुत किया गया।**
84	**प्रमाण (Pramana)**	**बिना तात्त्विक या वैज्ञानिक आधार के दुआ का प्रभाव।**
85	**प्रमाण (Pramana)**	**धार्मिक विश्वास पर आधारित कथन बिना प्रमाण के प्रस्तुत किया गया।**

समग्र निष्कर्ष:

इन आयतों में कई धार्मिक दावे किए गए हैं जो तात्त्विक और तर्कसंगत दृष्टिकोण से कमजोर प्रतीत होते हैं। इन दावों में प्रमाण, तर्क, और व्यावहारिक आधार की कमी है, जो न्याय दर्शन के सिद्धांतों के खिलाफ हैं।

Here is the structured analysis of the given verses from the Quran based on Nyaya Darshan elements:

आयत 86

आयत का अनुवाद:

"और हमने उन सबको अपनी (ख़ास) रहमत में दाखिल कर लिया बेशक ये लोग नेक बन्दे थे।"

चुना गया न्याय तत्व:

प्रमाण (Pramana)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): ईश्वर ने अपने विशेष रहमत से उन सभी को शामिल किया, जो नेक बंदे थे।**
- **हेतु (Reason): यह आयत केवल धार्मिक विश्वास पर आधारित है, लेकिन इसके किसी भौतिक या तात्त्विक प्रमाण का अभाव है।**
- **उदाहरण (Example): भारतीय दर्शन में यह विचार किया जाता है कि अच्छे कर्मों के फल मिलते हैं, लेकिन यह विचार किसी वास्तविक प्रमाण से सिद्ध नहीं होता, बल्कि नैतिकता और सामाजिक व्यवहार पर आधारित होता है।**
- **निगमन (Conclusion): यह आयत प्रमाण के सिद्धांत का उल्लंघन करती है, क्योंकि इसमें कोई भौतिक या वैज्ञानिक आधार नहीं दिया गया है।**

आयत 87

आयत का अनुवाद:

"और ज़वालऐ नून (यूनुस को याद करो) जबकि गुस्से में आकर चलते हुए और ये ख़्याल न किया कि हम उन पर रोज़ी तंग न करेंगे (तो हमने उन्हें मछली के पेट में पहुँचा दिया) तो (घटाटोप) अँधेरे में (घबराकर) चिल्ला उठा कि (परवरदिगार) तेरे सिवा कोई माबूद नहीं तू (हर ऐब से) पाक व पाकीज़ा है बेशक मैं कुसूरवार हूँ।"

चुना गया न्याय तत्व:
प्रमाण (Pramana)
विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): यूनुस को मछली के पेट में डाल दिया गया, जहां उन्होंने ईश्वर से अपनी ग़लती की माफी मांगी।**
- **हेतु (Reason): यह कथन एक अलौकिक घटना पर आधारित है, जो बिना किसी भौतिक या वैज्ञानिक प्रमाण के प्रस्तुत की गई है।**
- **उदाहरण (Example): भारतीय पौराणिक कथाओं में भी कुछ कथाएँ हैं जहाँ देवताओं के पास विशेष शक्तियाँ होती हैं, लेकिन ये कथाएँ विश्वास पर आधारित हैं, न कि प्रमाणित तथ्यों पर।**
- **निगमन (Conclusion): यह आयत प्रमाण के सिद्धांत का उल्लंघन करती है, क्योंकि यह एक अलौकिक घटना का बयान है, जिसका कोई भौतिक आधार नहीं है।**

आयत 88

आयत का अनुवाद:
"तो हमने उनकी दुआ कुबूल की और उन्हें रंज से नजात दी और हम तो ईमानवालों को यूँ ही नजात दिया करते हैं।"

चुना गया न्याय तत्व:
प्रमाण (Pramana)
विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): ईश्वर ने यूनुस की दुआ कुबूल की और उन्हें दुख से मुक्ति दी।**
- **हेतु (Reason): यह कथन दुआ के प्रभाव को बिना किसी वैज्ञानिक प्रमाण के प्रस्तुत करता है। दुआ का कोई वास्तविक तात्त्विक आधार नहीं होता।**
- **उदाहरण (Example): भारतीय दर्शन में देखा जाता है कि कष्टों से मुक्ति का रास्ता कार्यों और आत्म-प्रयास से होता है, न कि केवल प्रार्थना से।**
- **निगमन (Conclusion): यह आयत प्रमाण के सिद्धांत का उल्लंघन करती है क्योंकि यह बिना तात्त्विक या वैज्ञानिक प्रमाण के दुआ के प्रभाव को प्रस्तुत करती है।**

आयत 89

आयत का अनुवाद:
"और ज़करिया (को याद करो) जब उन्होंने (मायूसी की हालत में) अपने परवरदिगार से दुआ की ऐ मेरे पालने वाले मुझे तन्हा (बे औलाद) न छोड़ और तू तो सब वारिसों से बेहतर है।"

चुना गया न्याय तत्व:
प्रमाण (Pramana)
विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):** ज़करिया ने दुआ की कि उन्हें संतान मिले और ईश्वर ने उनकी दुआ सुन ली।
- **हेतु (Reason):** यह कथन एक धार्मिक विश्वास पर आधारित है। दुआ और ईश्वर की कृपा के बारे में कोई वास्तविक या तात्त्विक प्रमाण नहीं है।
- **उदाहरण (Example):** भारतीय चिकित्सा या जीवन दर्शन में किसी विशेष आकांक्षा को केवल दुआ से प्राप्त करने का विचार नहीं है, बल्कि यह जीवन के अनुभव और प्रयत्नों पर आधारित होता है।
- **निगमन (Conclusion):** यह आयत प्रमाण के सिद्धांत का उल्लंघन करती है क्योंकि दुआ के आधार पर किसी विशेष फल की प्राप्ति का दावा बिना तात्त्विक या वैज्ञानिक प्रमाण के किया गया है।

आयत 90

आयत का अनुवाद:
"तो हमने उनकी दुआ सुन ली और उन्हें यहया सा बेटा अता किया और हमने उनके लिए उनकी बीवी को अच्छी बना दिया इसमें शक नहीं कि ये सब नेक कामों में जल्दी करते थे और हमको बड़ी रग़बत और ख़ौफ के साथ पुकारा करते थे और हमारे आगे गिड़गिड़ाया करते थे।"

चुना गया न्याय तत्व:
प्रमाण (Pramana)
विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):** ईश्वर ने ज़करिया की दुआ सुनकर उन्हें संतान दी और उनकी पत्नी को ठीक किया।

- **हेतु (Reason): यह कथन केवल धार्मिक विश्वास पर आधारित है, जिसका कोई भौतिक या वैज्ञानिक प्रमाण नहीं है।**
- **उदाहरण (Example): भारतीय दार्शनिक विचारधारा में कार्यों और प्रयत्नों से ही परिणाम आते हैं, न कि केवल प्रार्थनाओं से।**
- **निगमन (Conclusion): यह आयत प्रमाण के सिद्धांत का उल्लंघन करती है क्योंकि यह केवल विश्वास पर आधारित दावा करती है और इसमें कोई तात्त्विक या वैज्ञानिक आधार नहीं है।**

सारणी (आयतों का तार्किक मूल्यांकन)

आयत संख्या	चुना गया तत्व	मुख्य आलोचना
86	**प्रमाण (Pramana)**	**कोई भौतिक या वैज्ञानिक आधार नहीं है।**
87	**प्रमाण (Pramana)**	**अलौकिक घटना का दावा, जो प्रमाणित नहीं है।**
88	**प्रमाण (Pramana)**	**दुआ के प्रभाव का कोई तात्त्विक आधार नहीं है।**
89	**प्रमाण (Pramana)**	**दुआ और ईश्वर की कृपा का कोई प्रमाण नहीं है।**
90	**प्रमाण (Pramana)**	**दुआ और कृपा का प्रभाव बिना तात्त्विक या वैज्ञानिक प्रमाण के।**

समग्र निष्कर्ष:

इन आयतों में प्रार्थना और ईश्वर की कृपा के बारे में कई दावे किए गए हैं, जो तात्त्विक और तर्कसंगत दृष्टिकोण से कमजोर प्रतीत होते हैं। इन दावों में प्रमाण, तर्क, और व्यावहारिक आधार की कमी है, जो न्याय दर्शन के सिद्धांतों के खिलाफ हैं।

Here is the structured analysis of the given verses from the Quran based on Nyaya Darshan elements:

आयत 91

आयत का अनुवाद:
"और (ऐ रसूल) उस बीबी को (याद करो) जिसने अपनी अज़मत की हिफाज़त की तो हमने उन (के पेट) में अपनी तरफ से रूह फूँक दी और उनको और उनके बेटे (ईसा) को सारे जहाँन के वास्ते (अपनी कुदरत की) निशानी बनाया।"

चुना गया न्याय तत्व:
प्रमाण (Pramana)
विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): ईश्वर ने एक महिला (मैरीम) के पेट में अपनी तरफ से रूह फूँकी और उसे और उसके बेटे ईसा को एक निशानी बना दिया।**
- **हेतु (Reason): यह आयत एक अलौकिक घटना का वर्णन करती है, जो बिना किसी भौतिक प्रमाण के प्रस्तुत की जाती है।**
- **उदाहरण (Example): भारतीय दर्शन में कोई भी घटना जो भौतिक नियमों और प्राकृतिक कारणों से विपरीत हो, उसे अलौकिक माना जाता है, लेकिन इसका कोई प्रमाण नहीं होता।**
- **निगमन (Conclusion): यह आयत प्रमाण के सिद्धांत का उल्लंघन करती है, क्योंकि इसमें कोई भौतिक या वैज्ञानिक आधार नहीं दिया गया है, और यह केवल विश्वास पर आधारित है।**

आयत 92

आयत का अनुवाद:
"बेशक ये तुम्हारा दीन (इस्लाम) एक ही दीन है और मैं तुम्हारा परवरदिगार हूँ तो मेरी ही इबादत करो।"

चुना गया न्याय तत्व:
प्रमेय (Prameya)
विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): इस्लाम को एकमात्र सही धर्म माना गया है और ईश्वर ने अपने अनुयायियों से केवल उनकी इबादत करने को कहा है।**

- **हेतु (Reason):** इस आयत में एक विशिष्ट धर्म को सच्चा धर्म बताया गया है, जबकि यह तर्कसंगत रूप से अन्य धर्मों के अस्तित्व और उनके वैधता को नकारता है।
- **उदाहरण (Example):** हिन्दू धर्म में विविधता के आधार पर विश्वास किया जाता है कि सभी धर्मों का उद्देश्य सत्य की खोज करना है, और कोई एक धर्म विशेष नहीं है जिसे अंतिम सत्य माना जाए।
- **निगमन (Conclusion):** यह आयत अन्य धर्मों को नकारने वाली है और यह तर्कसंगत दृष्टिकोण से गलत है, क्योंकि हर धर्म में सत्य की खोज की जाती है।

आयत 93

आयत का अनुवाद:
"और लोगों ने बाहम (इख़्तेलाफ़ करके) अपने दीन को टुकड़े-टुकड़े कर डाला (हालाँकि) वो सब के सब हिरफिर के हमारे ही पास आने वाले हैं।"

चुना गया न्याय तत्व:
हेतु (Hetu)
विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):** लोग अपने धर्म में विभाजन करते हैं, लेकिन वे सभी अंततः ईश्वर के पास लौटेंगे।
- **हेतु (Reason):** इस आयत में दावे किए गए हैं कि अंततः सभी लोग ईश्वर के पास लौटेंगे, लेकिन यह किसी सटीक या प्रमाणिक आधार पर नहीं है। यह केवल एक धार्मिक विश्वास है।
- **उदाहरण (Example):** भारतीय दर्शन में यह विचार किया जाता है कि हर व्यक्ति का मार्ग और उद्देश्य अलग हो सकता है, लेकिन अंत में हर किसी को उसकी कर्मों के अनुसार परिणाम मिलेगा।
- **निगमन (Conclusion):** यह आयत सिद्धांत रूप से अस्पष्ट है, क्योंकि इसमें भौतिक या तात्त्विक प्रमाण का अभाव है। यह धार्मिक विश्वासों पर आधारित है।

आयत 94

आयत का अनुवाद:
"(उस वक़्त फैसला हो जाएगा कि) तो जो शख़्स अच्छे-अच्छे काम करेगा और वह ईमानवाला भी हो तो उसकी कोशिश अकारत न की जाएगी और हम उसके आमाल लिखते जाते हैं।"

चुना गया न्याय तत्व:
प्रमेय (Prameya)
विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): जो लोग अच्छे कार्य करेंगे और ईमान लाएंगे, उनके कार्य व्यर्थ नहीं जाएंगे, और उनके कर्मों का लेखा-जोखा किया जाएगा।**
- **हेतु (Reason): यह आयत कर्मों और ईमान की महत्ता को स्वीकार करती है, लेकिन इसमें यह कोई भौतिक या वैज्ञानिक प्रमाण नहीं देती कि इन कर्मों का परिणाम कैसे होता है।**
- **उदाहरण (Example): भारतीय दर्शन में कर्मफल का विचार है, जहाँ कर्मों का परिणाम जीवन के विभिन्न पहलुओं पर निर्भर करता है, लेकिन यह केवल कर्मों के आधार पर ही सिद्ध नहीं किया जाता।**
- **निगमन (Conclusion): यह आयत ईश्वर के न्याय को एक धार्मिक परिप्रेक्ष्य से प्रस्तुत करती है, जो तात्त्विक रूप से प्रमाणिक नहीं है, क्योंकि इसमें कोई वैज्ञानिक आधार नहीं है।**

आयत 95

आयत का अनुवाद:
"और जिस बस्ती को हमने तबाह कर डाला मुमकिन नहीं कि वह लोग क़यामत के दिन हिरफिर के से (हमारे पास) न लौटे।"

चुना गया न्याय तत्व:
व्याप्ति (Vyapti)
विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): जिन बस्तियों को तबाह किया गया है, वे क़यामत के दिन ईश्वर के पास लौटेंगी।**
- **हेतु (Reason): यह आयत केवल धार्मिक विश्वासों पर आधारित है, और यह तात्त्विक रूप से साबित नहीं किया जा सकता है कि तबाही के बाद कोई स्थान या लोग पुनः लौटेंगे।**
- **उदाहरण (Example): भारतीय दर्शन में यह माना जाता है कि मृत्यु और पुनर्जन्म एक स्वाभाविक चक्र है, लेकिन यह कोई अलौकिक दावा नहीं है, बल्कि जीवन के सामान्य अनुभवों पर आधारित होता है।**

- **निगमन (Conclusion):** यह आयत तात्त्विक दृष्टिकोण से कमजोर है, क्योंकि इसमें कोई भौतिक प्रमाण या तर्कसंगत विश्लेषण नहीं है।

सारणी (आयतों का तार्किक मूल्यांकन)

आयत संख्या	चुना गया तत्व	मुख्य आलोचना
91	प्रमाण (Pramana)	अलौकिक घटना का दावा, जिसका कोई वैज्ञानिक प्रमाण नहीं है।
92	प्रमेया (Prameya)	अन्य धर्मों के अस्तित्व को नकारते हुए एक धर्म को सर्वोत्तम मानना।
93	हेतु (Hetu)	विश्वास आधारित विचार, जिसका भौतिक आधार नहीं है।
94	प्रमेया (Prameya)	कर्मों और ईमान का कोई भौतिक या तात्त्विक प्रमाण नहीं है।
95	व्याप्ति (Vyapti)	बस्तियों के पुनः लौटने का दावा बिना प्रमाण के।

समग्र निष्कर्ष:
इन आयतों में धार्मिक विश्वासों और अलौकिक घटनाओं का वर्णन किया गया है, जो तात्त्विक दृष्टिकोण से वैज्ञानिक और भौतिक प्रमाण के अभाव में कमजोर प्रतीत होते हैं। इन आयतों में जो दावे किए गए हैं, वे केवल विश्वास और धार्मिक दृष्टिकोण पर आधारित हैं, न कि वास्तविक प्रमाण या तर्क पर।

Here is the structured analysis of the given verses from the Quran based on Nyaya Darshan elements:

आयत ९६

आयत का अनुवाद:
"बस इतना (तवक्कुफ़ तो ज़रूर होगा) कि जब याजूद माजूद (हद ऐ सिकन्दरी) की क़ैद से खोल दिए जाएँगे और ये लोग (ज़मीन की) हर बुलन्दी से दौड़ते हुए निकल पड़ें।"

चुना गया न्याय तत्व:
प्रमाण (Pramana)
विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition)**: याजूज-माजूज को कैद से बाहर निकालने का वर्णन किया गया है।
- **हेतु (Reason)**: यह आयत एक अलौकिक घटना का वर्णन करती है, जो भौतिक रूप से प्रमाणित नहीं हो सकती। याजूज-माजूज का अस्तित्व और उनका कैद में होना एक अस्पष्ट धार्मिक विश्वास है।
- **उदाहरण (Example)**: हिन्दू धर्म में भी महापुराणों में ऐसे पात्र होते हैं जो काल्पनिक और अलौकिक होते हैं, लेकिन उनका भौतिक प्रमाण नहीं होता।
- **निगमन (Conclusion)**: यह आयत वास्तविकता से परे है और तात्त्विक रूप से वैज्ञानिक प्रमाण के बिना प्रस्तुत की जाती है।

आयत 97

आयत का अनुवाद:
"और क़यामत का सच्चा वायदा नज़दीक आ जाए तो फिर काफ़िरों की आँखे एक दम से पथरा दी जाएँ (और कहने लगे) हाय हमारी शामत कि हम तो इस (दिन) से ग़फलत ही में (पड़े) रहे बल्कि (सच तो यूँ है कि अपने ऊपर) हम आप ज़ालिम थे।"

चुना गया न्याय तत्व:
हेतु (Hetu)
विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition)**: क़यामत के दिन का सच्चा वायदा नज़दीक आने पर काफ़िरों की आंखों में पथराहट आ जाएगी।
- **हेतु (Reason)**: यह दावा किया गया है कि क़यामत के दिन लोगों को अपनी गलतियों का अहसास होगा, लेकिन यह घटना भविष्य के बारे में है, जिसका कोई प्रमाण नहीं है। यह एक विश्वास है जो तात्त्विक और भौतिक दृष्टिकोण से प्रमाणित नहीं किया जा सकता।
- **उदाहरण (Example)**: भारतीय दर्शन में भविष्य के घटनाओं के बारे में कुछ मान्यताएँ होती हैं, लेकिन यह सब व्यक्तिगत विश्वास और धार्मिक दृष्टिकोण पर आधारित होते हैं।

- **निगमन (Conclusion):** यह आयत किसी भौतिक प्रमाण या वैज्ञानिक आधार पर आधारित नहीं है, यह केवल भविष्य के क़यामत के दिन के बारे में एक विश्वास है।

आयत 98

आयत का अनुवाद:
"(उस दिन कहा जाएगा कि ऐ कुफ़्फ़ार) तुम और जिस चीज़ की तुम ख़ुदा के सिवा परसतिश करते थे यक़ीनन जहन्नुम की ईधन (जलावन) होंगे (और) तुम सबको उसमें उतरना पड़ेगा।"

चुना गया न्याय तत्व:
प्रमेय (Prameya)
विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):** क़यामत के दिन, कुफ़्फ़ार और उनके पूज्य देवता जहन्नुम में होंगे।
- **हेतु (Reason):** यह आयत एक सख़्त दंड और भविष्यवाणी का वर्णन करती है, लेकिन यह एक अलौकिक दृषटिकोन पर आधारित है और इसे भौतिक प्रमाण से परे माना जा सकता है।
- **उदाहरण (Example):** हिन्दू धर्म में भी यह विचार होता है कि पुण्य और पाप के आधार पर व्यक्ति को पुनर्जन्म मिलता है, लेकिन यह केवल विश्वास पर आधारित होता है और तात्त्विक रूप से प्रमाणित नहीं किया जा सकता।
- **निगमन (Conclusion):** यह आयत तात्त्विक दृष्टिकोण से बिना प्रमाण के दंड का वर्णन करती है और इसे किसी भौतिक सत्य के रूप में प्रमाणित नहीं किया जा सकता।

आयत 99

आयत का अनुवाद:
"अगर ये (सच्चे) माबूद होते तो उन्हें दोज़ख़ में न जाना पड़ता और (अब तो) सबके सब उसी में हमेशा रहेंगे।"

चुना गया न्याय तत्व:
व्याप्ति (Vyapti)
विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):** यदि माबूद सच्चे होते तो उन्हें दोज़ख़ (नर्क) में न जाना पड़ता।

- **हेतु (Reason):** इस आयत में एक निश्चित धारणा है कि जो देवता पूजे जाते हैं, वे केवल दोज़ख़ में भेजे जाते हैं यदि वे झूठे होते हैं। यह तात्त्विक रूप से किसी धार्मिक विश्वास पर आधारित है, न कि भौतिक सत्य पर।
- **उदाहरण (Example):** भारतीय दर्शन में यह माना जाता है कि विभिन्न देवी-देवता और उनके पूजक विभिन्न प्रकार के फल प्राप्त करते हैं, लेकिन यह हमेशा व्यक्तिगत विश्वास पर निर्भर होता है, न कि किसी सटीक भौतिक प्रमाण पर।
- **निगमन (Conclusion):** यह आयत व्यक्तिगत विश्वास और धार्मिक दृष्टिकोण पर आधारित है और इसका भौतिक या तात्त्विक प्रमाण नहीं है।

आयत 100

आयत का अनुवाद:
"उन लोगों की दोज़ख़ में चिंघाड़ होगी और ये लोग (अपने शोर व ग़ुल में) किसी की बात भी न सुन सकेंगे।"

चुना गया न्याय तत्व:
प्रमाण (Pramana)
विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):** जो लोग दोज़ख़ में होंगे, वे शोर-गुल में होंगे और किसी की बात नहीं सुन सकेंगे।
- **हेतु (Reason):** यह आयत दोज़ख़ (नर्क) में पीड़ा और शोर का वर्णन करती है, जो एक अलौकिक घटना है, जिसका कोई भौतिक प्रमाण नहीं है। यह केवल धार्मिक विश्वास है, न कि तात्त्विक या वैज्ञानिक सत्य।
- **उदाहरण (Example):** भारतीय दर्शन में भी यह विचार किया गया है कि नरक या स्वर्ग की स्थितियाँ केवल आत्मा के कर्मों पर निर्भर करती हैं, लेकिन यह सब परलोक की अवधारणाओं पर आधारित होते हैं, जिनका भौतिक प्रमाण नहीं होता।
- **निगमन (Conclusion):** यह आयत एक अलौकिक दृषटिकोन पर आधारित है और इसका कोई भौतिक या तात्त्विक प्रमाण नहीं है।

सारणी (आयतों का तार्किक मूल्यांकन)

आयत संख्या	चुना गया तत्व	मुख्य आलोचना
96	**प्रमाण (Pramana)**	**याजूज-माजूज के बारे में कोई भौतिक प्रमाण नहीं है।**
97	**हेतु (Hetu)**	**क़यामत के दिन के बारे में भविष्यवाणी, जिसका कोई प्रमाण नहीं है।**
98	**प्रमेया (Prameya)**	**कुफ़्फ़ार और उनके पूज्य देवताओं के बारे में दावा, जो भौतिक प्रमाण से परे है।**
99	**व्याप्ति (Vyapti)**	**देवताओं के सत्य होने की कोई भौतिक या तात्त्विक पुष्टि नहीं।**
100	**प्रमाण (Pramana)**	**दोज़ख़ (नर्क) का वर्णन जो केवल धार्मिक विश्वास पर आधारित है।**

समग्र निष्कर्ष:
इन आयतों में क़यामत और दोज़ख़ के बारे में दावे किए गए हैं, जो धार्मिक विश्वास और अलौकिक दृष्टिकोण पर आधारित हैं। इन दावों का भौतिक या तात्त्विक प्रमाण नहीं है, और यह केवल भविष्य के घटनाओं के बारे में अनुमानित विचार हैं।

Here is the structured analysis of the given verses from the Quran based on Nyaya Darshan elements:

आयत 101

आयत का अनुवाद:
"ज़बान अलबत्ता जिन लोगों के वास्ते हमारी तरफ से पहले ही भलाई (तक़दीर में लिखी जा चुकी) वह लोग दोज़ख़ से दूर ही दूर रखे जाएँगे।"

चुना गया न्याय तत्व:
प्रमाण (Pramana)
विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):** जिन लोगों के लिए पहले से भलाई तय हो चुकी है, वे दोज़ख़ से दूर रहेंगे।
- **हेतु (Reason):** यह दावा किया गया है कि कुछ लोगों की तक़दीर पहले से लिखी जा चुकी है और उनके लिए दोज़ख़ से मुक्ति तय है। यह परलोक और नियति पर आधारित विश्वास है, लेकिन इसका भौतिक या तात्त्विक प्रमाण नहीं है।
- **उदाहरण (Example):** हिन्दू धर्म में भी यह अवधारणा है कि कुछ लोगों के भाग्य में स्वर्ग और अन्य लोगों के भाग्य में नरक निर्धारित होते हैं, जो एक आस्थागत विचार है।
- **निगमन (Conclusion):** यह आयत तात्त्विक दृष्टिकोण से प्रमाण से परे है और केवल धार्मिक विश्वास पर आधारित है।

आयत 102

आयत का अनुवाद:
"(यहाँ तक) कि ये लोग उसकी भनक भी न सुनेंगे और ये लोग हमेशा अपनी मनमाँगी मुरादों में (चैन से) रहेंगे।"

चुना गया न्याय तत्व:
प्रमेय (Prameya)
विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):** यह आयत दर्शाती है कि वे लोग जिनका तक़दीर में भला लिखा है, वे कभी भी दोज़ख़ की भनक भी नहीं सुनेंगे और सदैव अपनी इच्छाओं की पूर्ति में रहेंगे।
- **हेतु (Reason):** यह विश्वास पर आधारित विचार है कि कुछ विशेष लोग सदैव शांति और सुख में रहेंगे, जबकि उनके विरोधी दोज़ख़ में होंगे। यह सत्य पर आधारित नहीं है, क्योंकि भौतिक जीवन में ऐसा कोई प्रमाण नहीं मिलता।
- **उदाहरण (Example):** भारतीय दर्शन में यह भी माना जाता है कि व्यक्ति के कर्मों के अनुसार उसकी भविष्यवाणी होती है, लेकिन यह भी केवल विश्वास और कर्म के फल के आधार पर होता है।
- **निगमन (Conclusion):** यह आयत तात्त्विक रूप से प्रमाण से परे और अवलोकन के बाहर है।

आयत 103

आयत का अनुवाद:
"और उनको (क़यामत का) बड़े से बड़ा ख़ौफ़ भी दहशत में न लाएगा और फ़रिश्ते उन से ख़ुशी-ख़ुशी मुलाक़ात करेंगे और ये ख़ुशख़बरी देंगे कि यही वह तुम्हारा (ख़ुशी का) दिन है जिसका (दुनिया में) तुमसे वायदा किया जाता था।"

चुना गया न्याय तत्व:
व्याप्ति (Vyapti)
विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):** क़यामत के दिन, जो लोग अच्छे कर्म करेंगे, वे डर से मुक्त होंगे और फरिश्तों द्वारा खुशख़बरी प्राप्त करेंगे।
- **हेतु (Reason):** यह आयत एक अलौकिक विश्वास पर आधारित है, जिसका कोई भौतिक प्रमाण नहीं है। फरिश्तों की उपस्थिति और उनकी बातों का कोई भौतिक सत्यापन नहीं किया जा सकता।
- **उदाहरण (Example):** हिन्दू धर्म में भी ऐसे सिद्धांत होते हैं कि पुण्य आत्माएँ देवी-देवताओं से मार्गदर्शन प्राप्त करती हैं, लेकिन यह विचार आस्थागत है।
- **निगमन (Conclusion):** यह आयत एक धार्मिक और अलौकिक विश्वास पर आधारित है और इसका भौतिक सत्यापन नहीं किया जा सकता।

आयत 104

आयत का अनुवाद:
"(ये वह दिन होगा) जब हम आसमान को इस तरह लपेटेंगे जिस तरह ख़तों का तूमार लपेटा जाता है जिस तरह हमने (मख़लूक़ात को) पहली बार पैदा किया था (उसी तरह) दोबारा (पैदा) कर छोड़ेगें।"

चुना गया न्याय तत्व:
प्रमाण (Pramana)
विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):** क़यामत के दिन, आसमान को इस तरह लपेट दिया जाएगा जैसे किसी किताब के पन्ने लपेटे जाते हैं।
- **हेतु (Reason):** यह एक अलौकिक दृषटिकोन है, जो भौतिक और वैज्ञानिक दृष्टिकोण से प्रमाणित नहीं हो सकता। भौतिक आकाश और उसकी संरचना के बारे में कोई स्पष्ट या वैज्ञानिक आधार नहीं है जो इस घटना को सत्यापित कर सके।

- **उदाहरण (Example): हिन्दू धर्म में भी आकाश को रचनात्मक रूप से यथावत रखा गया है, लेकिन ये सब धार्मिक दृष्टिकोण पर आधारित हैं।**
- **निगमन (Conclusion): यह आयत एक धार्मिक और अलौकिक घटना का वर्णन करती है जिसका कोई भौतिक प्रमाण नहीं है।**

आयत 105

आयत का अनुवाद:
"और हमने तो नसीहत (तौरेत) के बाद यक़ीनन जुबूर में लिख ही दिया था कि रूए ज़मीन के वारिस हमारे नेक बन्दे होंगे।"

चुना गया न्याय तत्व:
हेतु (Hetu)
विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): यह आयत कहती है कि पृथ्वी के वारिस नेक लोग होंगे।**
- **हेतु (Reason): यह भी एक विश्वास पर आधारित विचार है, जो धार्मिक दृष्टिकोण से आया है। यद्यपि अच्छे कर्मों के फल की बात की जाती है, यह किसी प्रमाणित और भौतिक सत्य से परे है।**
- **उदाहरण (Example): हिन्दू धर्म में भी इस प्रकार का विचार किया जाता है कि अच्छे कर्मों के फलस्वरूप व्यक्ति को धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष की प्राप्ति होती है, लेकिन यह भी एक विश्वास है।**
- **निगमन (Conclusion): यह आयत धार्मिक और आस्थागत दृष्टिकोण पर आधारित है, जिसका कोई भौतिक या तात्त्विक प्रमाण नहीं है।**

सारणी (आयतों का तार्किक मूल्यांकन)

आयत संख्या	चुना गया तत्व	मुख्य आलोचना
101	**प्रमाण (Pramana)**	**तक़दीर और दोज़ख़ से मुक्ति का दावा, जिसका भौतिक प्रमाण नहीं है।**
102	**प्रमेया**	**सुखी जीवन का दावा, जो भौतिक जीवन में प्रमाणित नहीं हो सकता।**

	(Prameya)	
103	**व्याप्ति (Vyapti)**	**फरिश्तों की उपस्थिति और भविष्यवाणी का कोई भौतिक प्रमाण नहीं।**
104	**प्रमाण (Pramana)**	**आसमान को लपेटने का दृश्य, जो भौतिक और वैज्ञानिक दृष्टिकोण से असंभव है।**
105	**हेतु (Hetu)**	**नेक लोगों के पृथ्वी के वारिस होने का दावा, जो एक आस्थागत विचार है।**

समग्र निष्कर्ष:
इन आयतों में क़यामत, तक़दीर, और दोज़ख़ के बारे में धार्मिक विश्वासों का वर्णन किया गया है, लेकिन इन सभी का भौतिक या तात्त्विक प्रमाण नहीं प्रस्तुत किया गया है। ये विचार धार्मिक दृष्टिकोण और आस्थागत विश्वासों पर आधारित हैं, जिनका कोई भौतिक सत्यापन नहीं किया जा सकता।

Here is the structured analysis of the given verses from Surah Al-Anbiya (Ayahs 106-112) based on Nyaya Darshan elements:

आयत 106

आयत का अनुवाद:
"इसमें शक नहीं कि इसमें इबादत करने वालों के लिए (एहकामें ख़ुदा की) तबलीग़ है।"

चुना गया न्याय तत्व:
प्रमाण (Pramana)
विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): इबादत करने वालों के लिए अल्लाह के आदेशों का प्रचार करना आवश्यक है।**
- **हेतु (Reason): यह आयत इस्लामी धर्म में प्रचार और उपदेश के महत्व को दिखाती है, जो एक धार्मिक दृष्टिकोण से सही है। परंतु इसका कोई भौतिक या वैज्ञानिक प्रमाण नहीं है।**

- **उदाहरण (Example): हिन्दू धर्म में भी उपदेश और प्रचार का महत्वपूर्ण स्थान है, जैसे भगवद गीता में भगवान श्री कृष्ण ने अर्जुन को उपदेश दिया।**
- **निगमन (Conclusion): यह आयत धार्मिक आस्थाओं और परंपराओं के अनुरूप है, लेकिन इसका भौतिक प्रमाण नहीं है।**

आयत 107

आयत का अनुवाद:
"और (ऐ रसूल) हमने तो तुमको सारे दुनिया जहाँन के लोगों के हक़ में अज़सरतापा रहमत बनाकर भेजा।"

चुना गया न्याय तत्व:
प्रमेय (Prameya)
विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): पैगम्बर मोहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को सम्पूर्ण मानवता के लिए रहमत बना कर भेजा गया है।**
- **हेतु (Reason): यह आयत मुस्लिमों के लिए पैगम्बर की महानता और उनके मिशन को मान्यता देती है, जो धार्मिक आस्थाओं पर आधारित है।**
- **उदाहरण (Example): हिन्दू धर्म में भी भगवान कृष्ण को "सर्वसर्वेश्वर" माना जाता है, जो सम्पूर्ण सृष्टि के प्रति करुणामयी और रहमत वाले हैं।**
- **निगमन (Conclusion): यह आयत धार्मिक दृष्टिकोण से पैगम्बर की भूमिका को प्रस्तुत करती है, लेकिन इसका कोई भौतिक प्रमाण नहीं है।**

आयत 108

आयत का अनुवाद:
"तुम कह दो कि मेरे पास तो बस यही "वही" आई है कि तुम लोगों का माबूद बस यकता ख़ुदा है तो क्या तुम (उसके) फरमाबरदार बन्दे बनते हो।"

चुना गया न्याय तत्व:
व्याप्ति (Vyapti)
विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): ईश्वर के अलावा कोई माबूद नहीं है और लोग उसे ही अपनी इबादत का पात्र मानें।**
- **हेतु (Reason): यह आयत एक धर्म विशेष की विचारधारा को स्पष्ट करती है, जो एकेश्वरवाद (Monotheism) पर आधारित है।**
- **उदाहरण (Example): हिन्दू धर्म में भी एकेश्वरवाद की अवधारणा पाई जाती है, जैसे "एकं सत् विप्रा बहुधा वदन्ति" (सत्य एक है, विद्वान उसे विभिन्न रूपों में पुकारते हैं)।**
- **निगमन (Conclusion): यह आयत एक धार्मिक दृष्टिकोण से एकेश्वरवाद को प्रस्तुत करती है, जिसका भौतिक प्रमाण नहीं है।**

आयत 109

आयत का अनुवाद:
"फिर अगर ये लोग (उस पर भी) मुँह फेरें तो तुम कह दो कि मैंने तुम सबको यकसाँ ख़बर कर दी है और मैं नहीं जानता कि जिस (अज़ाब) का तुमसे वायदा किया गया है क़रीब आ पहुँचा या (अभी) दूर है।"

चुना गया न्याय तत्व:
प्रमेय (Prameya)
विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): पैगम्बर (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने सभी को चेतावनी दी है, लेकिन वे यह नहीं जानते कि अज़ाब कब आएगा।**
- **हेतु (Reason): यह आयत इस विचार को प्रस्तुत करती है कि पैगम्बर ने अपनी जिम्मेदारी पूरी कर दी, लेकिन अज़ाब का समय केवल अल्लाह ही जानता है।**
- **उदाहरण (Example): हिन्दू धर्म में भी "कर्मफल" के सिद्धांत के अनुसार, परिणाम का समय और कारण ईश्वर के हाथ में होता है।**
- **निगमन (Conclusion): यह आयत एक धार्मिक दृष्टिकोण से भविष्य के अज़ाब का निर्धारण करने का दावा करती है, जो भौतिक सत्य से परे है।**

आयत 110

आयत का अनुवाद:
"इसमें शक नहीं कि वह उस बात को भी जानता है जो पुकार कर कही जाती है और जिसे तुम लोग छिपाते हो उससे भी ख़ूब वाक़िफ है।"

चुना गया न्याय तत्व:
हेतु (Hetu)
विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): अल्लाह हर बात को जानता है, चाहे वह सार्वजनिक हो या छिपी हुई।**
- **हेतु (Reason): यह आयत अल्लाह की सर्वव्यापकता और उसकी ज्ञान की सीमा को प्रस्तुत करती है, जो एक धार्मिक विश्वास है, लेकिन इसका भौतिक प्रमाण नहीं है।**
- **उदाहरण (Example): हिन्दू दर्शन में भी भगवान के "सर्वज्ञता" का विचार पाया जाता है, जैसे भगवद गीता में श्री कृष्ण ने अर्जुन को बताया कि "मैं सर्वव्यापक हूँ"।**
- **निगमन (Conclusion): यह आयत एक धार्मिक दृष्टिकोण से ईश्वर की सर्वज्ञता को दर्शाती है, जिसका भौतिक सत्यापन संभव नहीं है।**

आयत 111

आयत का अनुवाद:
"और मैं ये भी नहीं जानता कि शायद ये (ताख़ीरे अज़ाब तुम्हारे) वास्ते इम्तिहान हो और एक मोअययन मुद्दत तक (तुम्हारे लिए) चैन हो।"

चुना गया न्याय तत्व:
प्रमाण (Pramana)
विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): पैगम्बर (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) यह नहीं जानते कि अज़ाब का स्थगन केवल एक परीक्षा है।**
- **हेतु (Reason): यह आयत इस विचार को प्रस्तुत करती है कि ईश्वर के निर्णय अज्ञेय होते हैं और मनुष्य का काम केवल अपने कर्तव्यों को निभाना है।**
- **उदाहरण (Example): हिन्दू धर्म में "कर्म योग" की अवधारणा है, जिसमें व्यक्ति को अपने कर्मों का फल ईश्वर पर छोड़ देना चाहिए।**

- **निगमन (Conclusion): यह आयत भौतिक और तात्त्विक दृष्टिकोण से अप्रत्याशित परिस्थितियों और परीक्षा को दर्शाती है, जो एक धार्मिक आस्था पर आधारित है।**

आयत 112

आयत का अनुवाद:
"(आख़िर) रसूल ने दुआ की ऐ मेरे पालने वाले तू ठीक-ठीक मेरे और काफिरों के दरम्यिान फैसला कर दे और हमार परवरदिगार बड़ा मेहरबान है कि उसी से इन बातों में मदद माँगी जाती है जो तुम लोग बयान करते हो।"

चुना गया न्याय तत्व:
प्रमाण (Pramana)
विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): पैगम्बर (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने ईश्वर से मदद की प्रार्थना की है ताकि उनके और काफिरों के बीच न्याय हो।**
- **हेतु (Reason): यह आयत धार्मिक दृष्टिकोण से पैगम्बर की ईश्वर के प्रति श्रद्धा और न्याय की आवश्यकता को दर्शाती है।**
- **उदाहरण (Example): हिन्दू धर्म में भी "भगवान से न्याय की प्रार्थना" का सिद्धांत है, जैसे अर्जुन ने श्री कृष्ण से युद्ध में न्याय की प्रार्थना की थी।**
- **निगमन (Conclusion): यह आयत धार्मिक दृष्टिकोण से न्याय की अवधारणा को प्रस्तुत करती है, लेकिन इसका भौतिक प्रमाण नहीं है।**

सारणी (आयतों का तार्किक मूल्यांकन)

आयत संख्या	चुना गया तत्व	मुख्य आलोचना
106	**प्रमाण (Pramana)**	**धार्मिक आदेशों का प्रचार, जिसका कोई भौतिक प्रमाण नहीं।**
107	**प्रमेया (Prameya)**	**पैगम्बर की महानता का दावा, जो धार्मिक विश्वास पर आधारित है।**

108	**व्याप्ति (Vyapti)**	**एकेश्वरवाद का दावा, जो धार्मिक दृष्टिकोण पर आधारित है।**
109	**प्रमेया (Prameya)**	**अज़ाब का समय ईश्वर के हाथ में है, इसका भौतिक सत्यापन नहीं है।**
110	**हेतु (Hetu)**	**ईश्वर की सर्वज्ञता का दावा, जिसका कोई भौतिक प्रमाण नहीं है।**
111	**प्रमाण (Pramana)**	**ईश्वर के निर्णयों का अप्रत्याशित होना, जो धार्मिक विश्वास पर आधारित है।**
112	**प्रमाण (Pramana)**	**पैगम्बर की प्रार्थना, जिसका भौतिक सत्यापन नहीं है।**

समग्र निष्कर्ष:

इन आयतों में धार्मिक विश्वासों और आदेशों का वर्णन किया गया है, जिनमें से कोई भी भौतिक प्रमाणित या तात्त्विक सत्य नहीं है। ये विचार धार्मिक आस्थाओं और परंपराओं पर आधारित हैं, लेकिन इन्हें वैज्ञानिक दृष्टिकोण से सत्यापित नहीं किया जा सकता।